अध्याय द्वितीय

अम्बेडकरनगर जनपद के टाण्डा क्षेत्र का औद्योगिक स्वरूप

2.1 कृषि उद्योग

2.2 वस्त्र उद्योग

2.3 विद्युत उद्योग

2.4 सीमेंट उद्योग

2.5 शिक्षा उद्योग

2.6 श्रम उद्योग

2.7 निजी क्षेत्रों के अन्य उद्योग

2.8 सार्वजनिक क्षेत्रों के अन्य उद्योग

2. अम्बेडकरनगर जनपद के टाण्डा क्षेत्र का औद्योगिक स्वरूप

टाण्डा अम्बेडकरनगर जनपद का एक औद्योगिक क्षेत्र है। यहाँ का उद्योग भिन्न–भिन्न रूपों में अपना अलग–अलग महत्व रखता है। यहाँ का उद्योग यहाँ निवास करने वाली जनता की आर्थिक समृद्धि का कारक होते हुए उसके जीवनोपयोगी तत्वों के सृजन, संकलन और सदुपयोग में भी सहायक है। यह क्षेत्र जहाँ एक ओर आर्थिक दृष्टिकोण से आत्मनिर्भरता बनाये हुए है, वहीं दूसरी ओर अन्य क्षेत्रीय लोगों के लिए समुचित रोजगार के अवसर भी उपलब्ध करा रहा है।

वर्तमान परिवेश में टाण्डा क्षेत्र के लोगों के आर्थिक संसाधनों के अध्ययन की नितान्त आवश्यकता है। सरकार ने आर्थिक विकास में नई ऊँचाइयों को पाने के लिए अपनी विभिन्न योजनाओं का संचालन किया है, जिनसे टाण्डा के लोगों की आर्थिक उन्नति निरन्तर हो रही है। इन योजनाओं के अन्तर्गत स्वयं सहायता समूह योजना, ट्राईसेम योजना व हथकरघा वस्त्रोत्पादन योजना, पावरलूम योजना, कृषि व्यवसाय आदि को विविध भाँति क्रियान्वित किये जाने का प्रयत्न किया गया है। आँगनबाड़ी योजना, आशाबहू योजना के साथ–साथ कृषक जीवन से जुड़े कृषि श्रमिकों के जीवन स्तर में सुधार लाने के लिए तमाम प्रकार के प्रयत्न किये गये हैं। इतना ही नहीं इन्दिरा आवास योजना, अम्बेडकर ग्राम विकास योजना के साथ–साथ स्वच्छ शौचालय, शुद्ध पेयजल, पर्याप्त बिजली व्यवस्था का भी प्रबन्ध कराया गया है। साथ ही साथ मनरेगा योजना के अन्तर्गत 100 दिनों का काम प्रत्येक उस व्यक्ति को दिलाने का कार्य किया गया है, जो अत्यन्त गरीब हैं अर्थात् जिनके पास गरीबी रेखा के नीचे का कार्ड है।

टाण्डा अम्बेडकरनगर में जब शिक्षा के प्रति लोगों की अनियमितताओं

को देखा गया तो ज्ञात हुआ कि उनमें विभिन्न प्रकार की समस्याएँ हैं, उन समस्याओं में लोगों की आर्थिक आय के आधार स्रोतों की स्थिरता के तार्किक तत्वों को देखा जा सकता है। शिक्षा की अनियमितताओं के कारण टाण्डा में गरीबी रेखा के नीचे जीवन बिता रहे लोगों की एक बहुत बड़ी समस्या दृश्यमान होती है और वह समस्या अल्प संसाधनों पर आश्रितों की अधिकता की है। प्रायः परिवार में कमाने वाले वही रहते हैं और उन पर आश्रितों की संख्या क्रमशः बढ़ती जाती है, जो आर्थिक विकास में बाधा भी उत्पन्न करती है। पैदा होने वाले बालक तब तक कुछ नहीं कर सकते जब तक कि वे भी अर्जन करने लायक न हो जाएँ। आम तौर पर ज्यादातर लोग यह समझते हैं कि टाण्डा में जनसंख्या वृद्धि ज्यादा मात्रा में है, परन्तु यह ही मात्र एक सत्य नहीं है। आज इतने भौतिक स्वास्थ्य सम्बन्धी संसाधन उपलब्ध करा दिये गये हैं कि औसत मृत्यु दर जन्म दर की अपेक्षा काफी कम हो गयी है। इसी जन्म दर में वृद्धि व मृत्यु दर में कमी के कारण जनसंख्या में बढ़ोत्तरी नजर आ रही है।

टाण्डा अम्बेडकरनगर का सांख्यिकीय परिदृश्य

अक्षांश	**26.55^0 उत्तर**
देशान्त	**82.65^0 पूर्व**
समुद्र तल से ऊँचाई	78 मीटर
जनसंख्या (2011)	83079
भाषा	हिन्दी
बोली	अवधी / खड़ी
धर्म	हिन्दू 38 प्रतिशत, मुस्लिम 60 प्रतिशत, सिक्ख 0.2 प्रतिशत, बौद्ध 0.2 प्रशित, जैन 1.4 प्रतिशत एवं ईसाई 0.2 प्रतिशत

टाण्डा अम्बेडकरनगर

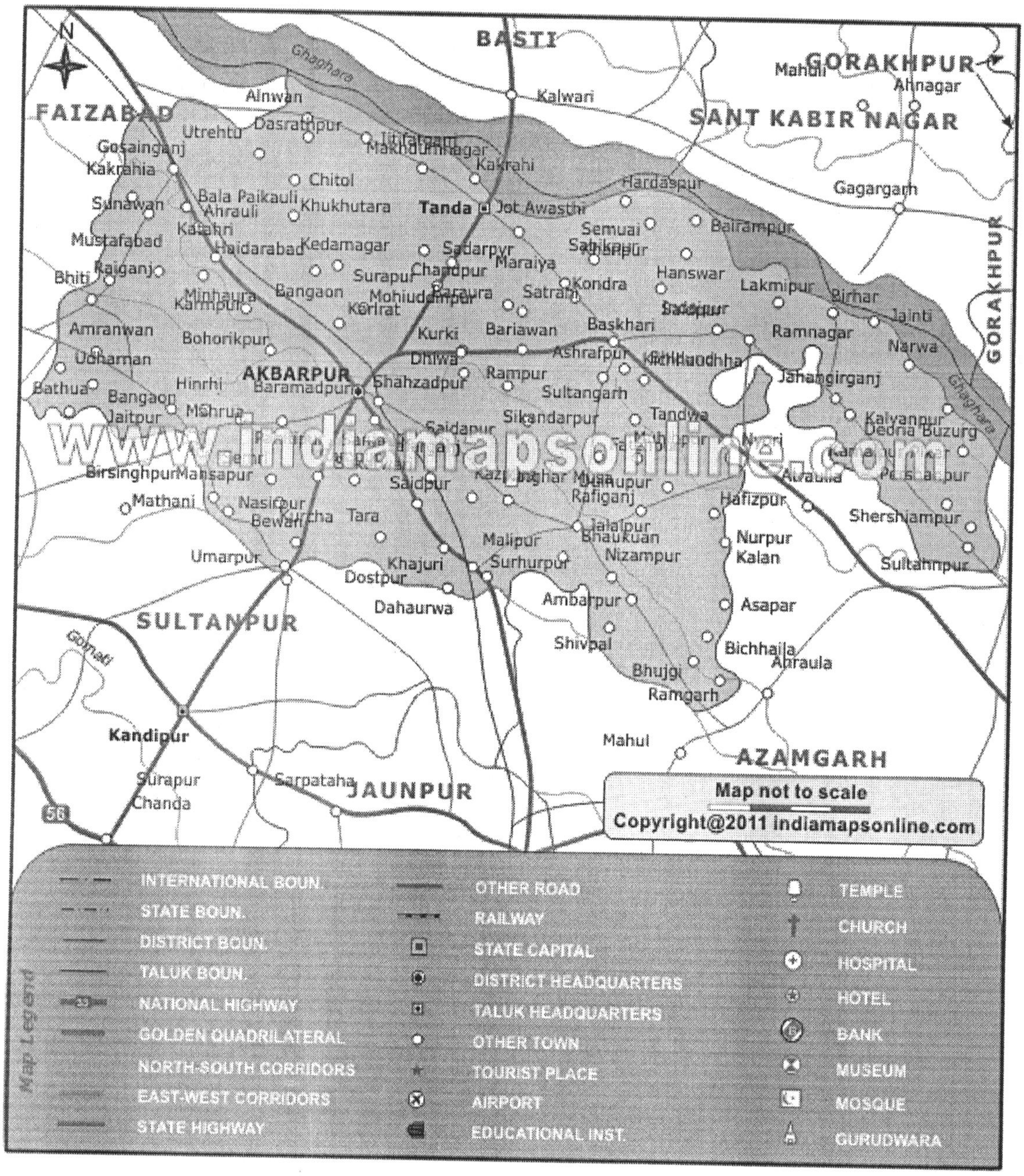

इन अवधारणाओं को ध्यान में रखते हुए आज परिवार नियोजन के कार्यक्रम के साधनों को व्यापक प्रचार–प्रसार करना आवश्यक बन पड़ा है। इसके साथ–साथ दृश्य एवं श्रव्य माध्यमों को भी इसमें व्यापक भूमिका निभानी होगी। जनसंख्या पर नियंत्रण के लिए ठोस एवं व्यवहारिक कार्यक्रम बनाकर ईमानदारी से उनके लोकाचार में लाये जाने की नितान्त आवश्यकता है। साम्प्रतिक परिवेश में टाण्डा में गरीबी रेखा के नीचे जीवन–यापन कर रहे लोगों में इसका अभाव जिस स्तर से दीख रहा है, शायद गरीबी रेखा के ऊपर जीवन व्यतीत करने के परिप्रेक्ष्य में दृश्यांकित नहीं हो रही है।

टाण्डा में आज के इस भौतिकवादी जीवन को जीने वाले लोगों का यदि व्यवस्थित अध्ययन किया जाए व सहज रूप में उनका विहंगावलोकन ही कर लिया जाए तो स्वयं ही उनके जीवन से जुड़ी समस्याएँ उभर कर बिम्बित होती नजर आती हैं। आज भी नगरों की भाँति यहाँ प्रत्येक व्यक्ति कार्य करना नहीं चाहता है। यदि संयोग से किसी आश्रयदाता ने अर्थोपार्जन करना शुरू कर दिया, तो परिवार के शेष जन आराम से जीवन बिताने के लिए तैयार हो जाते हैं। फलतः उस अकेले व्यक्ति द्वारा आर्जित की गयी धनराशि सम्पूर्ण परिवार के लिए अल्पतम् ही रह जाती है, जबकि प्रति व्यक्ति औसत आय के अर्जन में वृद्धि होने के उपरान्त ही गरीबी रेखा के नीचे के लोगों का जीवन स्तर सुधारा जा सकता है। उनके लिए विकास के समुचित अवसरों को उपलब्ध कराया जा सकता है। इस प्रकार की प्रतिकूल स्थितियों के बावजूद भी टाण्डा के कर्मठ, ईमानदार और आर्थिक क्षेत्र में विशेष उन्नति की अभिलाषा रखने वाले लोग अपने कार्य के प्रति सतत् प्रयत्नशील हैं। उनका यह प्रयत्न उन्हें निरन्तर विकास के मार्ग पर बढ़ने की अद्‌भुत प्रेरणा एवं अप्रतिम सम्बल प्रदान कर रहा है। उनकी इसी विशेष सशक्त कार्य शैली का प्रतिफल है कि आज वे अपने

विकास के प्रमुख मानकों के अर्जन में अपनी श्रेष्ठ भूमिका का निर्वाह कर रहे हैं।

टाण्डा में वर्ष 2012 के जनपद साख्यिकीय आँकड़ों के अनुसार कुल 14 न्याय पंचायतें, 96 ग्राम सभाएँ रहीं, जिनमें कुल 54 पंचायत घरों का निर्माण हुआ है। इन ग्राम पंचायतों के अन्तर्गत कुल 245 ग्राम पाये जाते हैं। जहाँ ग्रामीण जनता तो अपने जीवनयापन के साथ विकास के सारे कार्यों को सुचारु रूप से सम्पादित कर रहीं हैं, वहीं दूसरी ओर नगरीय क्षेत्र में रहने वाले लोग अपने–अपने कार्यों के सहारे अपने आर्थिक स्थित को बेहतर बनाने में निरन्तर संलग्न हैं।

टाण्डा की प्रमुख ग्राम पंचायतें, ग्राम सभाएँ एवं पंचायत घर

क्र0सं0	वर्ष	न्याय पंचायत की संख्या	ग्राम सभा की संख्या	पंचायत घर की संख्या
1	1994–95	14	96	10
2	2000–01	14	96	17
3	2005–06	14	96	22
4	2010–11	14	96	44
5	2011–12	14	96	54

स्रोत : साख्यिकीय पत्रिका 2012, टाण्डा अम्बेडकरनगर

सारणी नं 2.1

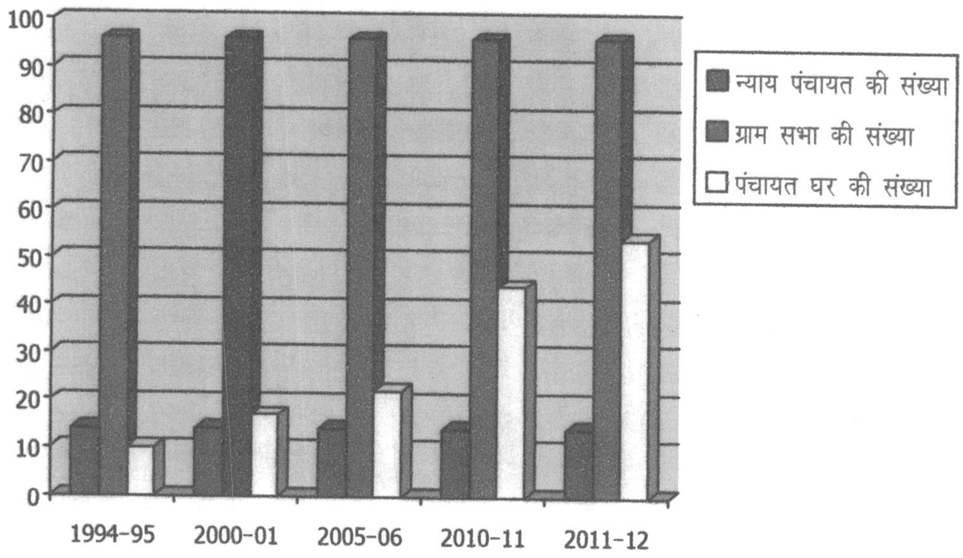

ग्राफ नं0 2.1

इस प्रकार से अम्बेडकरनगर जनपद के टाण्डा क्षेत्र में कुल 245 गाँव विद्यमान हैं। यहाँ ग्रामीण क्षेत्र के साथ–साथ नगरीय क्षेत्र का विकास भी बराबर हुआ है। इन क्षेत्रों में कृषि, वस्त्र, विद्युत, सीमेंट, शिक्षा, सूचना, साहित्य एवं श्रम आदि व्यवसायों की दिन–प्रतिदिन उन्नति हो रही है। जन सामान्य इनके अतिरिक्त अन्य निजी एवं सार्वजनिक क्षेत्रों में भी कार्य के समुचित अवसर प्राप्त कर अपने जीवन को सुखी एवं समृद्ध बना रहा है। इस क्षेत्र में चिकित्सा शिक्षा का भी पर्याप्त विकास हुआ है। शासकीय पोषण प्राप्त महामाया राजकीय एलौपैथिक कालेज सद्दपुर टाण्डा अम्बेडकरनगर का जहाँ विशेष महत्व है वहीं राम अधार नर्सिंग कालेज एवं राम अधार आयुर्वेदिक कालेज बड़ागाँव इब्राहिमपुर टाण्डा अम्बेडकरनगर का योगदान सराहनीय है।

टाण्डा की जनता के आर्थिक अध्ययन की प्रवृत्ति में जब उनकी भूमिवहन क्षमता का अध्ययन किया जाता है, तब उनकी भागीदारी का अद्भुत रूप दृश्यमान होता है। उनकी यही अद्भुत कार्यक्षमता ही उनकी उन्नति का मूल मंत्र है। अपनी इसी शक्ति के सहारे उन्होंने अपना सब कुछ व्यवस्थित कर आज अपनी अलग पहचान बनाई है, जो उनकी अपनी अद्भुत कार्यक्षमता का

द्योतक है। इनके निर्माण में किसी ने भी किसी ऐसे सहयोग का निर्वाह नहीं किया है, जो उन्हें सहजता से उनके लक्ष्य तक पहुँचाने में सहायक रहा हो। उल्टे ही लोगों ने उनके विकास मार्ग में बाधाँयें उत्पन्न कर तमाम विपरीत स्थितियों में उलझा कर जीवन व्यतीत करवाने की कोशिश की है। टाण्डा में गरीबों की इस बेचारगी, लाचारी व मजबूरी का लोगों ने फायदा भी उठाया है। उनके दुखों में सहानुभूति के आँसू टपकाने की कोशिश नहीं की। किसी ने उनके कार्यों में हाथ नहीं बटाये, बल्कि उनके हिस्से को ही बाँटने की कोशिश की है और लोगों की यही कोशिश आज ऐसी समस्याओं से लड़ने के लिए उन्हें अपार सम्बल प्रदान कर चुकी है, जिसके सहारे वे एक योद्धा की भाँति अटल भाव से अपने जीवन पथ पर बढ़ते जा रहे हैं। उनकी यही भारवहन की क्षमता आर्थिक पृष्ठभूमि में उनकी उन्नति का कारक बनी हुई है और निकट भविष्य में उन्हें बहुत आगे ले जाने में भी सफलता दिलायेगी।

टाण्डा का औद्योगिक विकास कृषि क्षेत्र से लेकर शिक्षा और सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र तक सर्वत्र प्रारम्भ हो गया है। लोगों ने अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप विभिन्न कार्यों को अपने जीवन का प्रमुख हिस्सा मान रखा है। प्रत्येक छोटी–बड़ी इकाई उनकी उन्नति में अभूतपूर्व भूमिका का निर्वाह कर रही है। अम्बेडकरनगर जनपद के औद्योगिक क्षेत्र टाण्डा की इन्हीं विकास की अवस्थाओं का साँगों–पाँग अध्ययन निम्नवत् शीर्षकों के अन्तर्गत किया जाना अपेक्षित एवं उपयुक्त प्रतीत होता है।

2.1 कृषि उद्योग

टाण्डा उत्तर प्रदेश का पूर्वांचल क्षेत्र है। यहाँ की भूमि अत्यन्त उपजाऊ है। यहाँ की जलवायु कृषि के लिए अत्यन्त उपयुक्त है। लगभग सभी प्रकार

की शीतोष्ण कटिबन्धीय फसलें यहाँ पैदा होती हैं और इन फसलों के उत्पादन में संलग्न कर्मियों में लोगों की भागीदारी बराबर की रही है। वे सदैव अपनी श्रम साधना के संयोग से कृषि उन्नति के सापेक्ष आवश्यक उपागमों को जुटाने में भी अपनी भागीदारी सदैव दर्ज कराते रहे हैं। सामाजिक एवं आर्थिक संतुलन के परिप्रेक्ष्य में जब दृष्टि डाली जाती है, तो आर्थिक उन्नति की महत्वपूर्ण दशाओं का अभिज्ञान होता है। आज कृषि क्षेत्र में भी जिनकी उत्पादकता जितनी ही अधिक है, वे उतने ही श्रेष्ठ और महत्वपूर्ण समझे जा रहे हैं तथा सामाजिक स्तर पर उनकी महत्ता उतनी ही अधिक है। इस प्रकार से सामाजिक महत्व में आर्थिक उन्नति का योग अत्यन्त महत्वपूर्ण रहा है, जो इस क्षेत्र के औद्योगिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करती रही है। ''वर्तमान में धरती की भूख मिटाने, उसे पोषकता प्रदान करने के लिए सरकार ने रासायनिक उर्वरकों के लगातार प्रयोग के कारण हो रहे नुकसान को भी ध्यान में रखा है। इसके लिए जैविक खादों को बढ़ावा देने की बात कही गयी है।''[1] टाण्डा के किसानों ने अपनी उत्पादों को बढ़ाने के लिए इनका समुचित उपयोग प्रारम्भ किया है।

---

1. शर्मा कुलदीप एवं प्रधान सुधीर : बजट की धुरी में एक और हरित क्रान्ति, योजना, मार्च 2011, पृ0 21

टाण्डा क्षेत्र में सरसों की फसल

चित्र नं0 2.1

सतत विकास हासिल करने के लिए जरूरी है कि आर्थिक विकास प्रक्रिया में हम अपने प्राकृतिक संसाधनों और पर्यावरण को ज्यों का त्यों बनाए रखते हुए उनका उस हद तक दोहन करें जिस हद तक ये खुद–ब–खुद अपना उत्पादन कर सकें यानी हमें प्राकृतिक संसाधनों और पर्यावरण के ब्याज का ही उपयोग करना होगा तथा मूल को ज्यों का ज्यों रखना होगा। वर्ष 2010 में सरसों की कृषि भूमि जहाँ 430 हेक्टेयर थी वह 2011 में घटकर 307 हो गयी। तिलहन 430 हेक्टेयर में बोया जाता था, जो 307 में सिमट के रह गया। गन्ना 462 से बढ़कर 471 हेक्टर और 551 हेक्टेयर बढ़कर 562 हेक्टेयर में

बोया गया, जिससे यहाँ के किसानों की आर्थिक उन्नति में काफी सहायता मिली।

टाण्डा क्षेत्र के सरसों, तिलहन, गन्ना एवं आलू उत्पादन का विवरण (हेक्टेयर में)

क्र0सं0	वर्ष	सरसों	तिलहन	गन्ना	आलू
1	1993–94	361	441	740	782
2	2000–01	287	344	710	685
3	2005–06	409	424	563	557
4	2009–10	430	430	462	551
5	2010–11	307	307	478	562

स्रोत : साख्यिकीय पत्रिका 2012, टाण्डा अम्बेडकरनगर

सारणी नं0 2.2

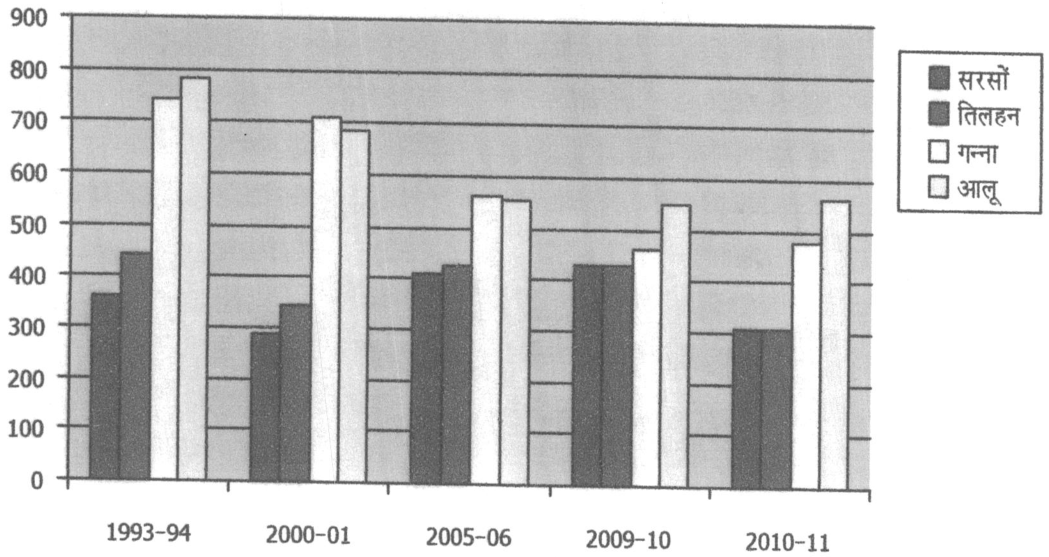

ग्राफ नं0 2.2

आज उचित तकनीकी ज्ञान और प्रबंधन उपायों के द्वारा प्राकृतिक उपायों एवं उप–उत्पादों का दोहन प्रतिकूल प्रभावों के बिना किया जा सकता है। उदाहरणार्थ ''कृत्रिम प्रजनन और पोषण के जरिये मछली उत्पादन बढ़ाया जा सकता है। जैविक एवं रासायनिक उर्वरकों की संतुलित मात्रा, जैव

पाड़कनाशियों का उपयोग कर और जल व मिट्टी के वैज्ञज्ञनिक प्रबंधन द्वारा फसल की उत्पादकता बढ़ाई जा सकती है। इसी तरह उर्वरकों और सिंचाई साधनों का उचित उपयोग कर जंगलों को तेजी से पनपाया जा सकता है और और उनसे अधिक वनोपज प्राप्त की जा सकती है।"[2]

टाण्डा विकासखण्ड में खेत में आलू संग्रहण करते किसान

चित्र नं0 2.2

यहाँ के कृषक पारम्परिक कृषि से पृथक व्यवसायिक कृषि में संलग्न हैं। वे निरन्तर उन्हीं फसलों का उत्पादन बहुलता से करने का कार्य कर रहे हैं, जो उनकी आर्थिक उन्नति में विशेष सहायक हों, जिनसे वे न्यूनतम् प्रयत्नों से

2. कटार सिंह, प्रौद्योगिकी, पर्यावरण एवं विकास, बलदेव सिंह मदान- सम्पादक-कुरुक्षेत्र, वर्ष 46, अंक-12, अक्टूबर 2001, पृ. 4

अधिकतम् आय की प्राप्ति कर सकें। उनके द्वारा जारी प्रत्येक प्रयास साम्प्रतिक, औद्योगिक नीतियों को अंगीकृत कर विशेष लाभ की दिशा में अग्रसर है। एक ओर वे रासायनिक उर्वरकों का उपयोग कर रहे हैं, तो दूसरी ओर अधुनातन कृषि संयन्त्रों का प्रयोग करते हुए अपने कार्यों को और अधिक सुगम और श्रेष्ठ भी बना रहे हैं। उनकी कार्य शैली, उनकी निरन्तर की सृजनशीलता का साँगोपाँग परिमार्जित व परिष्कृत रूप में कृषि को औद्योगिक रूप प्रदान कर नवीन दिशा में अपनी अलग पहचान बनाये हुए है। उनकी यह पहचान गेहूँ, चावल के साथ–साथ पिपरमेण्ट, गन्ना, हरी साग–सब्जियाँ, मशरूम और सफेद मूसली जैसी औषधीय कृषि के उत्पादन से बनी हुई है। ससमय इस दिशा में किया जाने वाला इनका प्रयत्न एक ओर इन्हें आर्थिक दृष्टि से समृद्ध कर रहा है, तो दूसरी ओर इनके कार्य में एक विशेष नवता लाने में भी सामान्य रूप से सक्षम है। कृषि जगत में यह क्षेत्र उदार जलवायु एवं उपजाऊ मिट्टी के संयोग से अपनी अलग पहचान बनाये हुए है। विकासखण्ड टाण्डा में वर्ष 2011 में चावल उत्पादन के लिए कुल 14896 हेक्टेर कृषित भूमि का उपयोग किया गया और गेहूँ उत्पादन के लिए कुल 13623 हेक्टेयर भूमि प्रयोग में लायी गयी। यह कृषित भूमि का उपयोग विगत वर्षों की अपेक्षा अधिक है।

टाण्डा विकासखण्ड में चावल एवं गेहूँ का क्षेत्रफल (हेक्टयेर में)

क्र0सं0	वर्ष	चावल	गेहूँ
1	1993–94	13098	12099
2	2000–01	13195	12617
3	2005–06	14534	12576
4	2009–10	14757	12637
5	2010–11	14896	13623

स्रोत : साख्यिकीय पत्रिका 2012, टाण्डा अम्बेडकरनगर

सारणी नं0 2.3

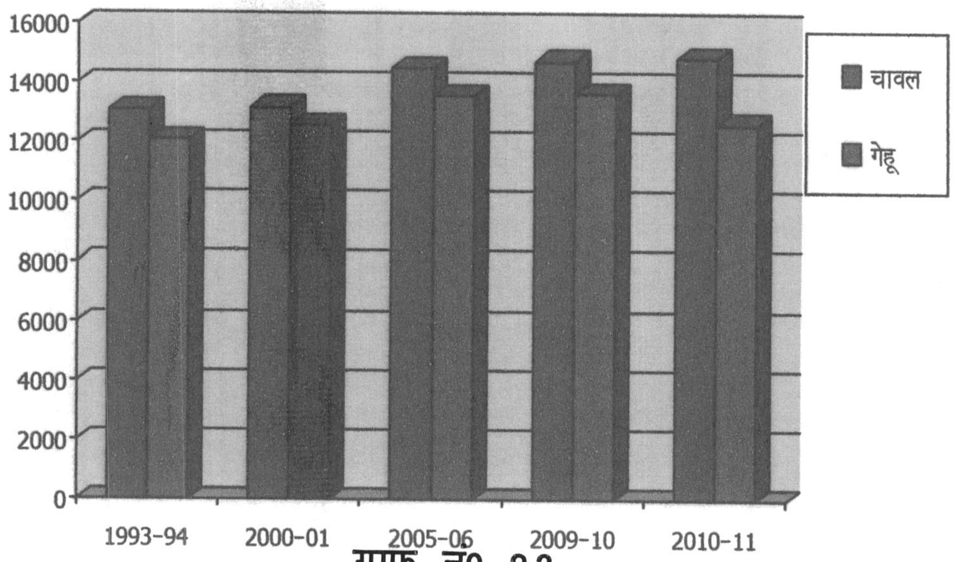

ग्राफ नं0 2.3

टाण्डा विकासखण्ड में वर्ष 2011 के मानकानुसार उर्द की कृषि 303 हेक्टेयर भूमि पर की गयी, जो पिछले वर्ष से कम रही। चना क लिए 119 हेक्टेयर भूमि का उपयोग किया गया। मटर 428 हेक्टेयर भूमि में बोयी गयी तथा दाल की खेती 1125 हेक्टेयर भूमि पर की गयी, जो विगत वर्षों की अपेक्षा कम रही है। इस मानस के अनुसार में उक्त फसलों के सापेक्ष उचित लाभ का संकेत प्रतीत नहीं होता।

टाण्डा विकासखण्ड में उर्द, चना, मटर एवं दाल उत्पाद का क्षेत्रफल

(हेक्टयेर में)

क्र0सं0	वर्ष	उर्द	चना	मटर	दाल
1	1993—94	648	236	686	2141
2	2000—01	881	145	637	2049
3	2005—06	300	153	505	1281
4	2009—10	320	123	434	1155
5	2010—11	303	119	428	1125

स्रोत : साख्यिकीय पत्रिका 2012, टाण्डा अम्बेडकरनगर

सारणी नं0 2.4

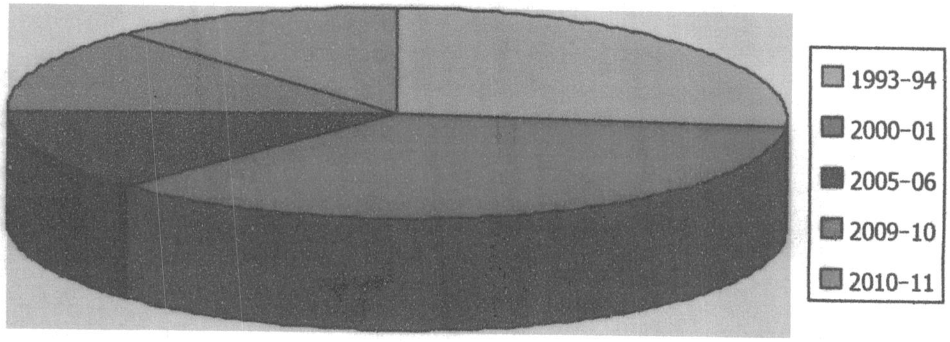

ग्राफ नं0 2.4

इस प्रकार से टाण्डा क्षेत्र में कृषि के विविध क्षेत्रीय विवरण उपलब्ध होते हैं। इनसे कृषि उत्पादकता की स्थिति एवं उसकी वृद्धि के विविध रूप परिलक्षित होते हैं।

2.2 वस्त्र उद्योग

मनुष्य की मूलभूत आवश्यकताओं में वस्त्र की उपयोगिता अद्वितीय है। इसके बिना सभ्य, सुशील और अनुभवशील व्यक्ति अपने आदिम रूप अवस्था से पृथक नहीं हो सकता। वस्त्र आभूषण ही उसके व्यक्तित्व की पहचान बिम्बित करने में प्रमुख भूमिका निभाता है। वर्तमान समय में देश के विभिन्न छोटे बड़े नगरों में यह उद्योग फूल–फल रहा है। अम्बेडकरनगर जनपद में भी इस उद्योग की महत्ता आज बहुत ही प्रभावी रूप में बनी हुई है। यहाँ के बुने कपड़े देश के कोने–कोने में प्रयुक्त हो रहे है, तथा लोग उससे एक ओर तन ढकने का कार्य कर रहे है, तो दूसरी ओर अपनी आकर्षक साज–सज्जा में निखार लाने की सामर्थ्यता भी हासिल कर रहे है। वस्त्र उद्योग इस जनपद के प्रमुख

उत्पादों में से एक है, जिसमें क्षेत्र की बड़ी संख्या में गरीब जनता संलग्न हो अपने रोजगार के अवसर प्राप्त की है।

जनपद मुख्यालय से 19 किमी. उत्तर में घाघरा के दक्षिणी तट पर बसा यह औद्योगिक नगर साम्प्रतिक परिवेश में सम्पूर्ण भारत में ही नहीं बल्कि विश्व स्तर पर वस्त्र उद्योग में अपना महत्व बनाये हुए है। इस नगर की मुख्य पहचान यहाँ के बुने हुए टेरीकाट कपड़े से है। यहाँ का बुना टेरीकाट का कपड़ा बहुत ही मजबूत और आरामदायक होता है, जिसे एक तरफ निर्बल, सर्वहारा, दलित, शोषित व चिरपीड़ित समाज अपने लिए महत्वपूर्ण मानता है, वहीं दूसरी तरफ बाहर इसी कपड़े की आरामदेयता मजबूती के चलते इसे महँगे दर पर व्यापारियों द्वारा बेचा व खरीदा जाता है। आज नेपाल, चीन, इंग्लैण्ड, श्रीलंका, कोरिया, वियतनाम, मलेशिया आदि राष्ट्रों में टाण्डा के बुने हुए कपड़ों को उपभोक्ताओं द्वारा पहने हुए देखा जा सकता है। इतना ही नहीं विदेशी पर्यटकों ने आज इसे दुनिया के कोने–कोने में पहुँचा दिया है।

टाण्डा में मुख्यतया गमछा, लुंगी एवं बनारसी साड़ी के निर्माण का कार्य बुनकर करते हैं, इसके अतिरिक्त बुनकर चादर, तौलिया आदि का निर्माण भी करते हैं। व्यक्तिगत क्षेत्र के बुनकर स्वयं मालिक–श्रमिक बनकर पावरलूम द्वारा वस्त्र निर्माण कार्य की समस्त प्रक्रियाओं को सम्पन्न करते हुए उत्पादन करते हैं तथा मध्यस्थों–दलालों के माध्यम से स्वयं माल का विक्रय करते हैं। जो बुनकर सहकारी समितियों के सदस्य होते हैं वे सरकार द्वारा चलायी जा रही समस्त योजनाओं का लाभ उठा सकते हैं।

टाण्डा विकासखण्ड में विद्युत चालित करघा मशीन

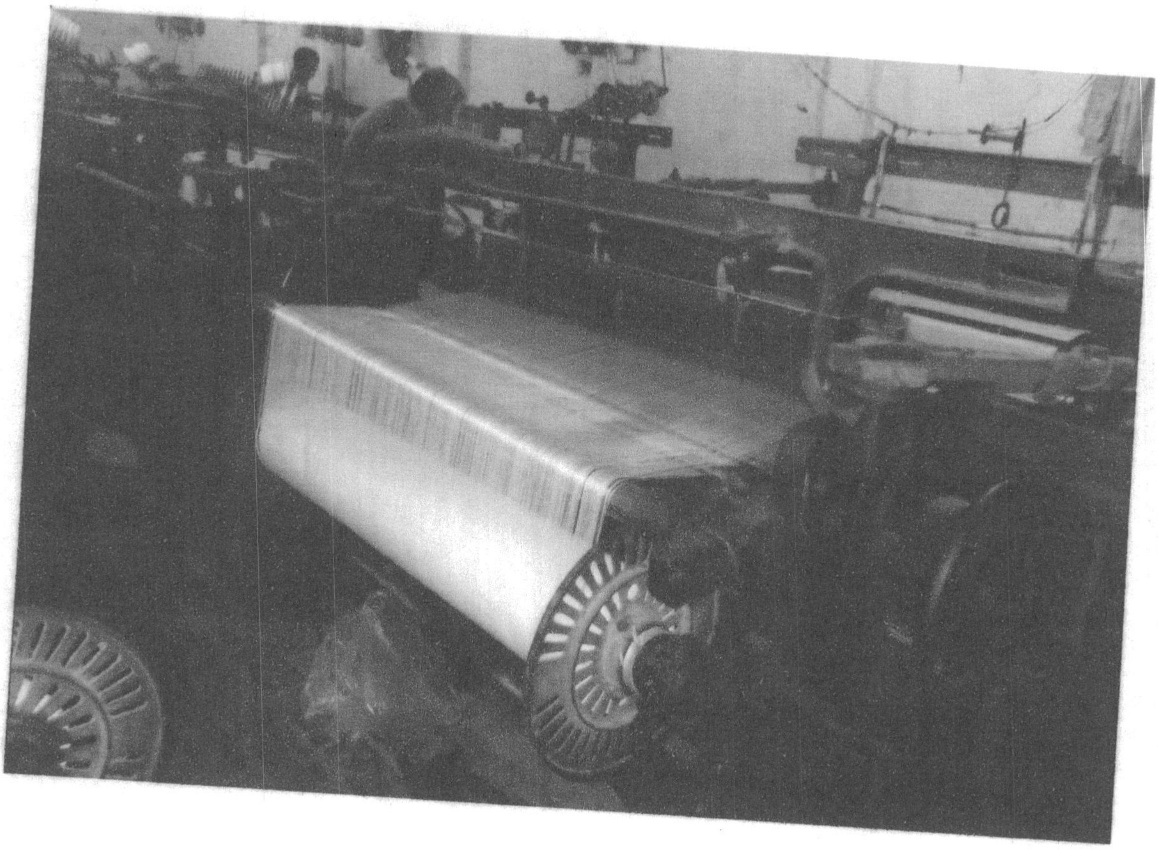

चित्र नं0 2.2

वस्त्र उद्योग की विभिन्न समस्याओं का निस्तारण करने के लिए राज्य वस्त्र निगम ने अपना संशोधित पुनर्वासन प्रस्ताव आपरेटिंग एजेन्सी I.F.C.I को दिनांक 17 नवम्बर 1997 को प्रस्तुत किया था, जिसे 22 दिसम्बर 1997 को आपरेटिंग एजेन्सी द्वारा आहुत की गयी तथा संयुक्त बैठक में कुछ संशोधन साथ अनुमोदित कर दिया गया। B.I.F.R. द्वारा राज्य वस्त्र निगम की पुर्नवासन योजना 24/04/98 द्वारा अनुमोदित कर दी गयी है, जिसके अनुसार कार्यवाही की जा रही है। इसके अतिरिक्त भी सरकार द्वारा बुनकरों के विकास एवं कल्याण हेतु अनेक कल्याणकारी योजनाएँ चलायी जा रही हैं।

इस प्रकार का शासकीय संरक्षण प्राप्त कर जनपद का हथकरघा उद्योग अपने विकास क्रम में अबाध गति से आगे बढ़ना शुरू किया, किन्तु बुनकरों में

तभी एक औद्योगिक विकास की विशिष्ट भावना का जागरण हुआ, जिसके चलते उन्होंने हथकरघा उद्योग के साथ–साथ विद्युत चलित करघों से वस्त्रोत्पादन का व्यवसाय शुरू किया, जो बुनकर आर्थिक विपन्नता की कसैली पीड़ा को सह रहे थे, हथकरघा उद्योग से जुड़ा रहना उनकी मजबूरी है। अपनी इसी लाचारी के चलते स्वतंत्रता प्राप्ति के लगभग छः दशक के बाद भी उनके जीवन स्तर में वह परिवर्तन नहीं आ पाया, जिसे आजादी की भावभूमि पर पनपते देखा जा रहा है। इस प्रकार से आर्थिक विपन्नता व व्यवसायगत प्रतिकूलता की अनचाही विसंगतियों से घिरा हुआ उत्तर प्रदेश का हथकरघा उद्योग जनपद अम्बेडकरनगर के टाण्डा कस्बे में विशेष रूप से दृश्यमान हो रहा है। इस उद्योग से आज भी तमाम ऐसे लोग जुड़कर अपने जीवन की आधारभूत आवश्यकताओं की प्रपूर्ति करने का कार्य कर रहे हैं, जो मूलतः किसी और व्यवसाय से सम्बन्ध नहीं रखते हैं, उनका सिर्फ एक ही लक्ष्य है कि यदि कार्य किया जाय तो मात्र वस्त्रोत्पादन का कार्य किया जाय। इस कार्य को करने के लिए वे हथकरघा एवं पावरलूम वस्त्र उद्योग से जुड़कर निरन्तर अपने क्रियाकलापों को स्वरूपायित करते रहे हैं। इनके विकास में उत्पन्न होने वाली बाधाओं का सर्वप्रमुख कारण आर्थिक शोषण रहा है। जहाँ एक ओर वस्त्र उद्योग दिन दूना रात चौगुना विकास कर रहा है, वहीं इस उद्योग से जुड़े श्रमिक तनिक भी उन्नति नहीं कर पा रहे हैं। उनकी दशा जैसे कल थी, वैसे आज भी बनी हुई है। आय से अधिक खर्च की विसंगति से जूझते वस्त्र उद्योग के श्रमिक आज भी अपने उसी पारम्परिक जीवन शैली में जिये जा रहे हैं, क्योंकि उन्हें न तो पर्याप्त शासकीय योजनाओं का ज्ञान है और न ही उन्हें उनका समुचित लाभ ही मिल पा रहा है।

2.3 विद्युत उद्योग

अम्बेडकरनगर जनपद का प्रमुख औद्योगिक क्षेत्र टाण्डा जहाँ अपनी भिन्न–भिन्न विशिष्ट देनदारियों के लिए जाना व पहचाना जाता है, वहीं विद्युत उत्पादन के क्षेत्र में भी इसकी उपादेयता विशिष्ट रही है। एनटीपीसी टाण्डा से विद्युत का उत्पादन भारी मात्रा में किया जा रहा है। यहाँ पैदा होने वाली बिजली का उपयोग देश के अन्य प्रमुख क्षेत्रों के साथ–साथ विदेश में की जाती है। भारत का पड़ोसी राष्ट्र नेपाल भी आज टाण्डा में पैदा हुई बिजली का सबसे बड़ा उपभोक्ता बना हुआ है। यहाँ के विद्युत उत्पादन से राष्ट्रीय आय में व्यापक वृद्धि होने के साथ–साथ इस क्षेत्र के श्रमिकों को कार्य का अवसर भी प्राप्त हुआ है, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति में निरन्तर सुधार हो रहा है। बदलती आर्थिक स्थिति के कारण आज वे उन्नति कर रहे हैं। उनकी इस बदलती स्थिति के कारण उनका पारिवारिक स्तर भी उच्च हुआ है।

एन.टी.पी.सी. टाण्डा का एक दृश्य

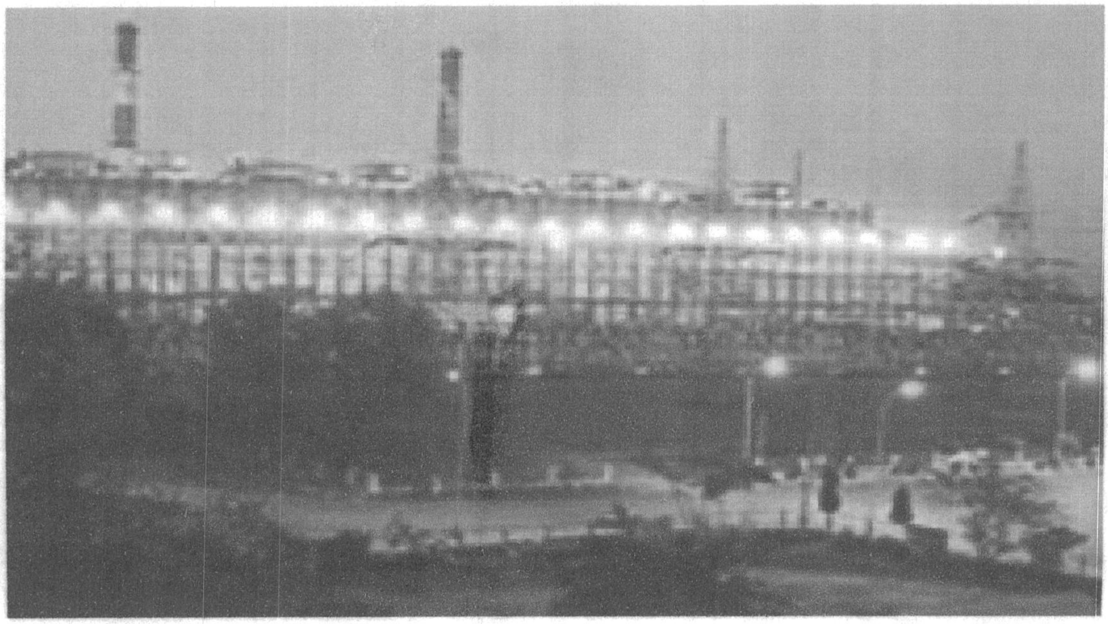

चित्र नं0 2.3

एनटीपीसी टाण्डा में विद्युत का उत्पादन 440 मेगावाट से बढ़ाये जाने का भी प्रस्ताव किया जा चुका है। प्रोजेक्ट लगाने के प्रयोग में लाई जाने वाली भूमि के अभाव के कारण अभी यह कार्य सुचारु रूप से संचालित नहीं हो पा रहा है। इस पावर प्रोजेक्ट के आस–पास का क्षेत्र अत्यन्त घना बसा हुआ है तथा यहाँ की भूमि बहुत ही उपजाऊ है। यहाँ के किसान अपने उपजाऊ भूमि व अपने पैतृक आवासों को छोड़कर किसी नवसृजित अधिवास में जीवन बिताने के लिए तैयार नहीं हैं, जिससे यहाँ का विद्युत उद्योग अपनी अन्य इकाइयों को लगाने में सफल नहीं हो रहा है। फिर भी यहाँ जितने संसाधनों में यह ऊर्जा का स्रोत कार्य कर रहा है, यह अपने आप में विलक्षण है। शासन द्वारा संचालित महारत्न कम्पनी एनटीपीसी की टाण्डा इकाई ने विद्युत उत्पादन के क्षेत्र में अपनी जो छवि बनाई है, वह अन्य उत्पादन केन्द्रों से बेहतर है। टाण्डा क्षेत्र के कुछ प्रमुख लोगों ने निजी क्षेत्रों में बड़े–बड़े जनरेटर लगाकर विद्युत उत्पादन कर उसका निजी उपयोग करते हुए उसको व्यवसायिक रूप भी देने का कार्य किया है। वे विभिन्न जलसों, उत्सवों, कार्यक्रमों एवं रहीस बस्तियों में विद्युत आपूर्ति का कार्य कर रहे हैं और बदले में उससे आय की प्राप्ति भी कर रहे हैं। इस तरह से विद्युत व्यवसाय से जुड़कर भी विभिन्न लोग भारी मात्रा में अर्थोपार्जन करने के साथ–साथ जनसामान्य को लाभान्वित कराने में अपनी प्रमुख भूमिका का निर्वाह कर रहे हैं।

2.4 सीमेंट उद्योग

किसी भी राष्ट्र के विकास के प्रारम्भिक तत्व के रूप में वहाँ की प्राथमिक निर्माण इकाईयों को चिन्हित किया जाता है। इसके लिए पहली प्रमुख आवश्यकता सीमेन्ट की होती है। सीमेंन्ट के द्वारा ही एक राष्ट्र अपने विकास

के प्रायः सभी कार्यों को क्रियान्वित करता है। राष्ट्रीय स्तर पर बनी इस औद्योगिक विकास के सर्वप्रमुख इकाई का स्वरूप अम्बेडकरनगर जनपद में भी दृष्टिगत होता है। यहाँ इस दिशा में पर्याप्त कार्य फलीभूत हो रहा है। जे0पी0 सीमेन्ट फैक्ट्री की सुस्थापना कर एक ओर जहाँ नेशनल थर्मल पावर कार्पोरेशन लिमिटेड से निकले अवशिष्ट का सदुपयोग किया जा रहा है, वहीं दूसरी ओर सीमेन्ट उत्पादकता में नियमित वृद्धि कर औद्योगिक विकास की परम्परा में एक प्रभावी कदम चलने का प्रयत्न जारी है।

फतेहपुर कनौढ़ा, टाण्डा अम्बेडकरनगर में स्थित जे.पी. सीमेंट फैक्ट्री ने टाण्डा की आर्थिक स्थिति के सुधार में अपनी विशेष भूमिका का निर्वाह किया है। यहाँ के सीमेंट उद्योग में कार्य का अवसर प्राप्त करने से जहाँ इस क्षेत्र के लोगों को रोजगार का अवसर प्राप्त हुआ है, वहीं दूसरी ओर उन्हें सस्ते दर पर सीमेंट भी प्राप्त हो रही है। इसके सहारे वे अपने भवन का निर्माण सहजता से कर सकते हैं। इतना ही नहीं इस उद्योग की उत्पादकता वृद्धि से क्षेत्रीय जनता के साथ–साथ देश के अन्य प्रान्तों के लोगों को भी विशेष लाभ मिल रहा है। इस उद्योग से प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से क्षेत्रीय लोगों के साथ–साथ देश के अन्य प्रान्तों के नागरिकों को भी लाभ मिल रहा है। एक ओर लोग रोजगार के अवसर प्राप्त करके विकास कर रहे हैं, तो दूसरी ओर यहाँ की बनी सीमेंट के उपयोग से लोग अपनी आर्थिक स्थिति में सुधार लाने का कार्य कर रहे हैं। एक तरह से देखा जाय तो इस उद्योग ने पर्यावरण संरक्षण में भी अपनी प्रमुख भूमिका का निर्वाह किया है। एनटीपीसी टाण्डा से निकले अपशिष्ट (राख) का यह भारी उपभोक्ता है, जो राख को जिप्सम के साथ पिसाई करके सीमेंट बनाने का कार्य करता है।

इस प्रकार से अम्बेडरनगर जनपद के टाण्डा क्षेत्र का औद्योगिक स्वरूप अपने विकास के पथ पर अग्रसर होकर निरन्तर देश की उन्नति में अपना योगदान कर रहा है।

टाण्डा क्षेत्र में जे.पी. सीमेंन्ट फैक्ट्री का एक दृश्य

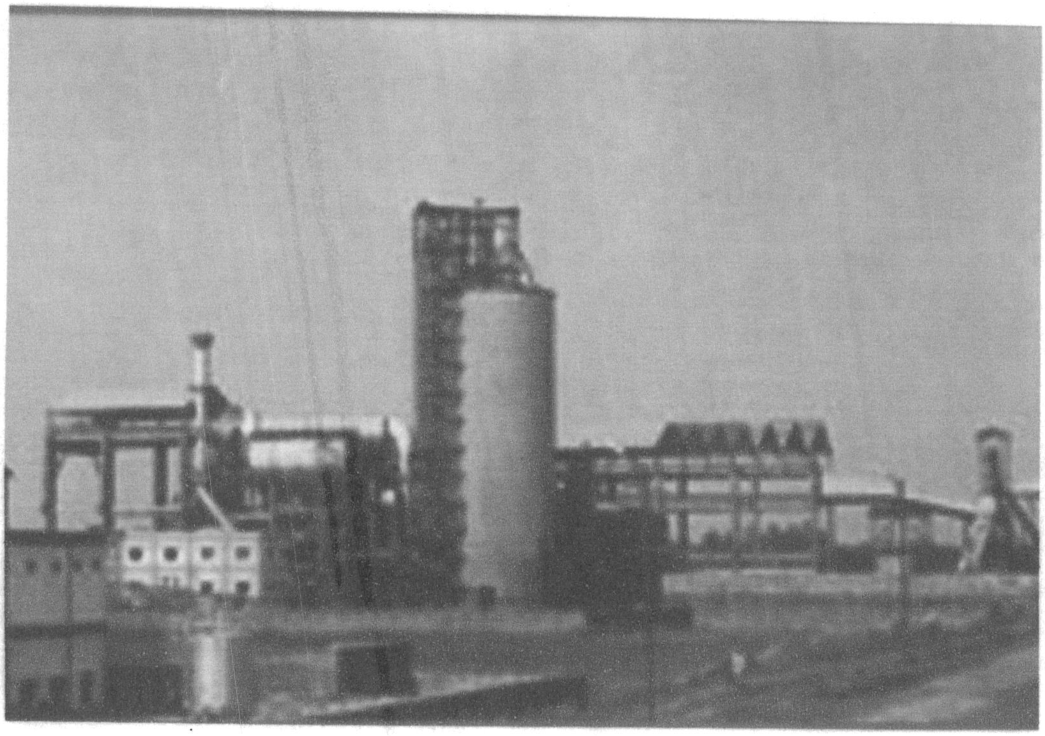

चित्र नं0 2.4

इस सीमेंट को यहाँ से रेल यातायात और सड़क यातायात के माध्यम से दूर–दूर तक पहुँचाने का कार्य किया जाता है। एक ओर भारतीय रेलवे को इससे आर्थिक आय की प्राप्ति होती है, तो दूसरी ओर बड़े–बड़े ट्रकों से इसको एक जगह से दूसरी जगह पहुँचाने के लिए श्रमिकों, वाहन चालकों एवं क्लीनरों की आवश्यकता पड़ती है, जिसकी पूर्ति से जहाँ एक ओर जे.पी. सीमेंट फैक्ट्री टाण्डा को लाभ मिल रहा है, वहीं दूसरी ओर इस कार्य में लगे हुए लोगों को रोजगार का उत्तम अवसर भी मिला हुआ है। इस रोजगार के अवसर को प्राप्त करने से उन श्रमिकों व अन्य कर्मियों को आर्थिक लाभ मिल रहा है। इसी

आर्थिक आय की प्राप्ति से वे अपनी आर्थिक उन्नति करते हुए जीवन के सभी क्षेत्रों में विशेष लाभ प्राप्त कर रहे हैं।

जेपी सीमेंट फैक्ट्री फतेहपुर कनौढ़ा, टाण्डा अम्बेडकरनगर का टाण्डा के औद्योगिक विकास में विशेष योगदान है। यह क्षेत्रीय देनदारी आर्थिक दृष्टिकोण से विशेष रूप में अपने प्रभाव को बनाये हुए है। भले ही सामाजिक स्तर पर उसे विशेष लाभ मिला हो या न मिला हो।

2.5 शिक्षा उद्योग

वर्तमान परिवेश में शिक्षा को नये रूप में अंगीकार करने की परम्परा चल पड़ी है। जहाँ शिक्षा को पहले रोजगारपरक माना जाता था, जीवन का एक पवित्र हिस्सा कहा जाता था तथा जन–जीवन के सुधार में इसकी महत्ता रेखांकित की जाती थी? वहीं आज व्यवसायिक शिक्षा के नाम पर शिक्षा का व्यवसायीकरण होना शुरू हो गया है। लोग शिक्षा का व्यवसाय कर रहे हैं। वे किसी भी व्यवसायिक उपाधि के लिए शासनतन्त्र से परे सार्वजनिक क्षेत्र में निजी व्यवसाय को कायम करने के लिए शिक्षा का व्यवसाय कर रहे हैं, जितने भी व्यवसायिक पाठ्यक्रम हैं, सबके संचालन में अधिकाधिक अर्थ अर्जन करना लोगों का ध्येय हो गया है। वे व्यक्ति की ज्ञान वृद्धि व उसके बौद्धिक क्षमता को बढ़ाने के निमित्त अथवा उसे सुसंस्कृत मानों के रूप में स्थापित करने के लिए शिक्षा का प्रसार नहीं कर रहे हैं, बल्कि जीवनोपयोगी शिक्षा के नाम पर अधिकाधिक लूट–खसोट का कार्य कर रहे हैं।

टाण्डा विकासखण्ड के अन्तर्गत वर्ष 2011–12 में प्राप्त सांख्यिकीय आँकड़ों के आधार पर कक्षा 1 से 5 तक मान्यता प्राप्त शिक्षण संस्थाओं में कुल नामांकित छात्रों की संख्या 17965 एवं छात्राओं की संख्या 17931 रही है।

कक्षा 1 से 5 तक मान्यता प्राप्त शिक्षण संस्थाओं में विद्यार्थियों की संख्या

क्र0सं0	वर्ष	छात्र	छात्रा
1	1994–95	18057	14445
2	2000–01	36550	16382
3	2005–06	40317	17473
4	2010–11	17965	17931
5	2011–12	17965	17931

स्रोत : साख्यिकीय पत्रिका 2012, टाण्डा अम्बेडकरनगर

सारणी 2.5

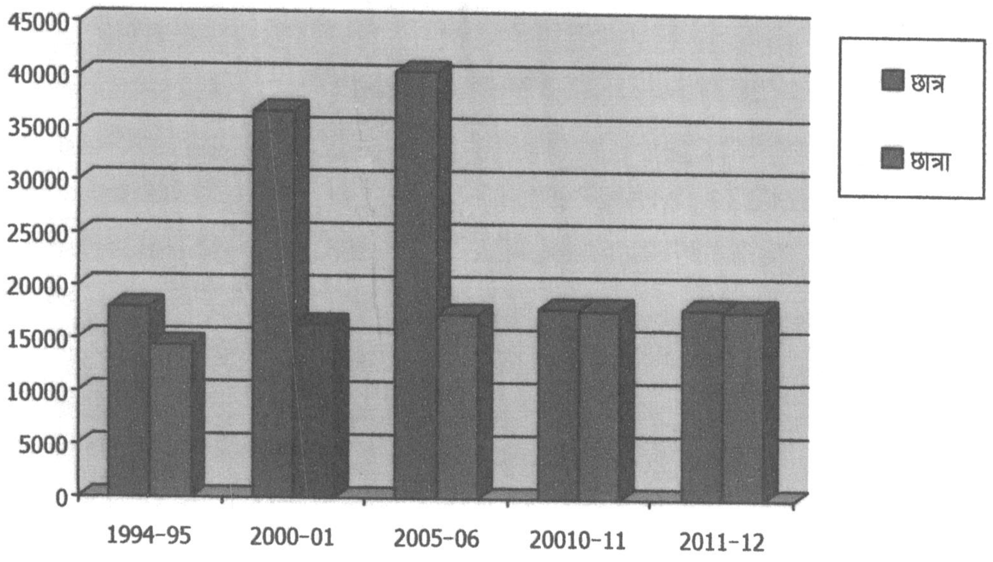

ग्राफ नं0 2.5

बी.एड्. हो या बी.सी.ए. / बी.टेक., एम.एड्. हो एम.बी.ए. / एम.सी.ए. / एम. टेक. या एम.बी.बी.एस. इनके नाम पर तो आज लोग अपनी बड़ी–बड़ी झोलियाँ भरने में पूर्ण सफलता प्राप्त कर रहे हैं। गरीब, निर्बल, सर्वहारा समाज इसके बारे में यदि सोचता है तो उसके लिए ये चाँद–तारों से कम नहीं हैं, जिसे छूना और पाना उसके लिए आसान नहीं है। इसके साथ ही साथ शासन द्वारा स्थापित शैक्षिक इकाईयाँ यहाँ के निर्बल सर्वहारा छात्रों को उचित एवं उपयुक्त

शिक्षा निःशुल्क प्रदान करने का कार्य कर रहे हैं।

टाण्डा विकासखण्ड में बच्चों शिक्षा देती शिक्षिका

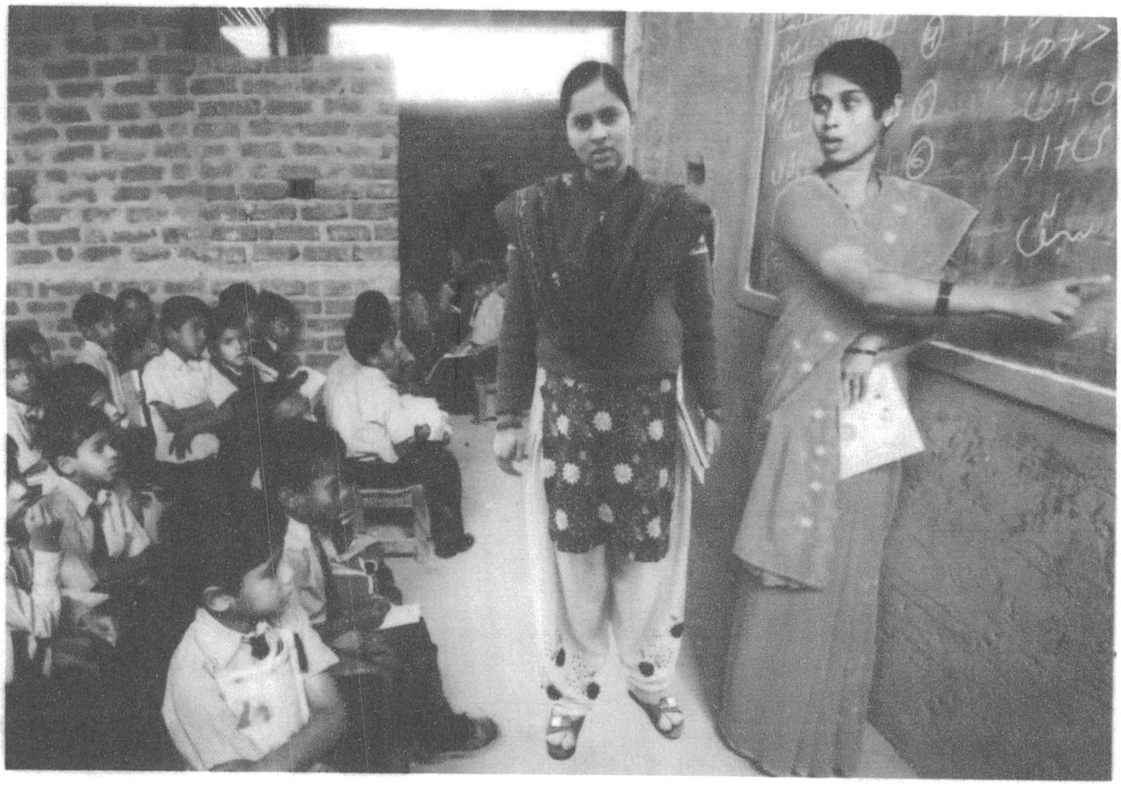

चित्र नं0 2.5

अम्बेडकरनगर जनपद के औद्योगिक क्षेत्र टाण्डा में इस दिशा में भी लोगों को कार्य करते हुए देखा जा सकता है। वे अपने आर्थिक आय की वृद्धि में शिक्षा को व्यवसाय के रूप में अपनाते जा रहे हैं। प्राथमिक स्तर पर जहाँ एक ओर पब्लिक स्कूलों की स्थापना दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है, वहीं माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तर पर व्यवसायिक वर्ग की शिक्षा के नाम पर अधिकाधिक अर्थोपार्जन किया जा रहा है। इतना ही नहीं स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर उन्हीं पाठ्यक्रमों को विशेष माना जा रहा है, जो महाविद्यालयों के सुसंचालन में अपनी विशेष भागीदारी दर्ज करा सकें तथा

आर्थिक आय की वृद्धि में अपनी विशेष भूमिका का निर्वाह कर सकें।

टाण्डा विकासखण्ड के अन्तर्गत वर्ष 2011–12 में प्राप्त सांख्यिकीय आँकड़ों के आधार पर कक्षा 9 से 12 तक मान्यता प्राप्त शिक्षण संस्थाओं में कुल नामांकित छात्रों की संख्या 8886 एवं छात्राओं की संख्या 7950 रही है।

कक्षा 9 से 12 तक मान्यता प्राप्त शिक्षण संस्थाओं में विद्यार्थियों की संख्या

क्र0सं0	वर्ष	छात्र	छात्रा
1	1994–95	5950	805
2	2000–01	5938	2104
3	2005–06	8554	5935
4	2010–11	8286	7950
5	2011–12	8886	7950

स्रोत : साख्यिकीय पत्रिका 2012, टाण्डा अम्बेडकरनगर

सारणी 2.6

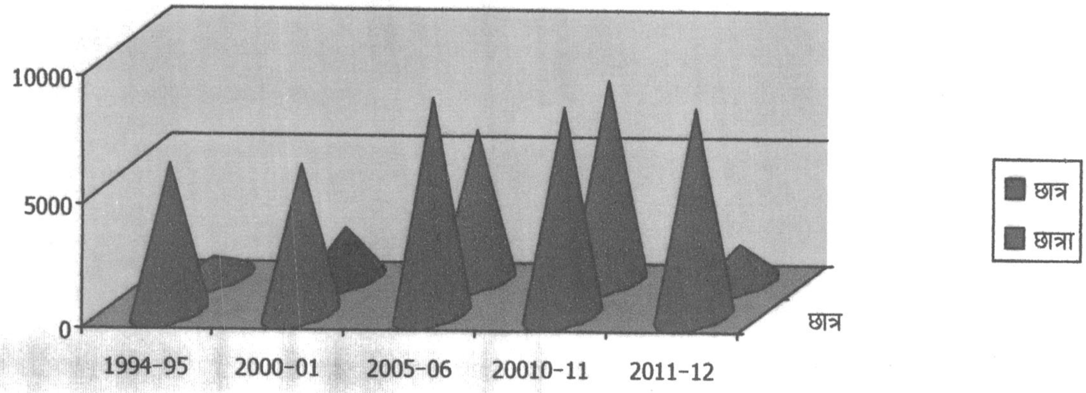

ग्राफ नं0 2.6

साम्प्रतिक परिवेश में टाण्डा के गरीब लोगों की तमाम समस्याओं का समुचित निदान किया जा सकता है। उसके लिए मात्र एक ही विकल्प शिक्षा है। शिक्षा के द्वारा ही गरीबों के जीवन स्तर में सकारात्मक परिवर्तन लाया जा सकता है। यदि शिक्षा का व्यवस्थित व पर्याप्त स्वरूप जनमानस में क्रियान्वित किये बगैर निर्बल, सर्वहारा वर्ग के सर्वांगीण विकास की परिकल्पना को समूर्त

करने का प्रयत्न किया जाता है, तो वह मात्र एक भ्रम है, एक धोखा है। यह मूल रूप से व्यक्ति के अन्तःकरण की परिवर्तित चिर दशा अवस्था पर ही निर्भर करता है।

टाण्डा विकासखण्ड के अन्तर्गत वर्ष 2011–12 में प्राप्त सांख्यिकीय आँकड़ों के आधार पर स्नातक स्तर पर मान्यता प्राप्त शिक्षण संस्थाओं में कुल नामांकित छात्रों की संख्या 1742 है, जो विगत वर्ष से कम है, जबकि छात्राओं की संख्या विछले वर्षों से बढ़कर 2303 हो गयी है।

डिग्री कक्षा तक मान्यता प्राप्त शिक्षण संस्थाओं में विद्यार्थियों की संख्या

क्र0सं0	वर्ष	छात्र	छात्रा
1	1999–2000	432	37
2	2005–06	2060	339
3	2009–10	1871	1601
4	2010–11	1742	2303
5	2011–12	1742	2303

स्रोत : साख्यिकीय पत्रिका 2012, टाण्डा अम्बेडकरनगर

सारणी 2.7

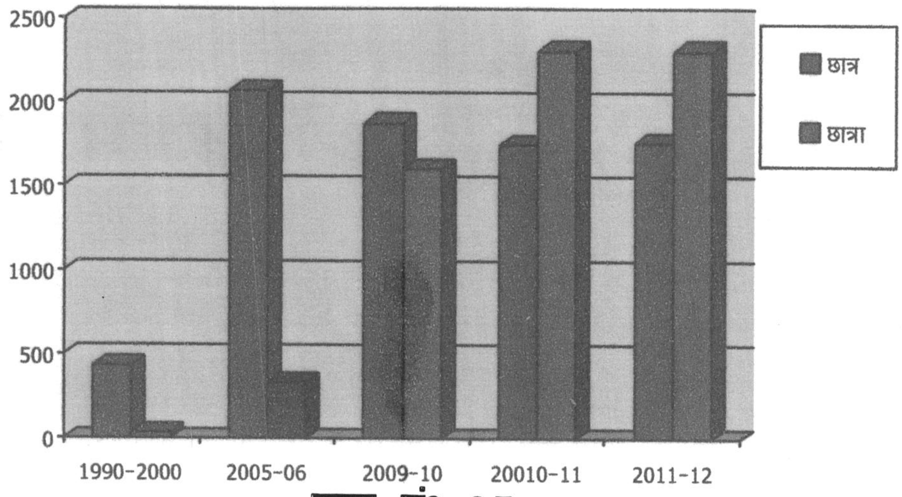

ग्राफ नं0 2.7

आज प्रत्येक जाति, वर्ग, धर्म व सम्प्रदाय के लोगों को शैक्षिक सुविधायें प्रदान की जा रही हैं, परन्तु इन सबों की उपयुक्त व उत्तम व्यवस्था के बावजूद

भी आज का निर्बल, सर्वहारा, दलित, शोषित समाज आत्मकल्याण के सभी मानकों का समुचित सदुपयोग नहीं कर पा रहा है। आज के पाठ्यक्रम में मात्र समितियों को चाहिए कि जिस प्रकार से साहित्य, संस्कृति, समाज, विज्ञान, तकनीकी और पर्यावरण पर आधारित विषयों को बालकों के शिक्षार्जन हेतु प्रयुक्त किया जा रहा है। ठीक उसी प्रकार से औद्योगिक शिक्षा को एक स्वतंत्र विषय के रूप में संचालित किया जाना चाहिए। जब प्राथमिक स्तर से लेकर उच्च शैक्षिक संस्थाओं में व्यवसायिक शिक्षा को एक स्वतन्त्र विषय के रूप में अंगीकृत किया जाएगा तथा शैक्षिक पृष्ठभूमि में उसकी महत्ता को प्रस्तुत किया जाएगा तो निश्चित रूप से आने वाली पीढ़ी इससे लाभान्वित होगी। उसे इस बात का पूर्ण ज्ञान प्राप्त हो जाएगा कि जब तक व्यवसायिक शिक्षा को जन–जन से जोड़ा नहीं जाएगा, तब तक सामान्य नागरिक का जीवन स्तर परिवर्तित न हो सकेगा, क्योंकि उसे इसका ज्ञान ही नहीं है कि सामाजिक सन्दर्भों से सम्बन्धित पाठ्य–पुस्तकों को पढ़े या पढ़ाये जाने की आज आवश्यकता है। वह तो सिर्फ इतना ही जानता है कि शिक्षा का उद्देश्य पढ़ाई पूरी करके नौकरी पा लेना है, जबकि शिक्षा का उद्देश्य मात्र यह नहीं है।

प्रायः सभी देशों के राष्ट्रीय उत्थान में उनकी शिक्षा व्यवस्था महत्वपूर्ण स्थान रखती है। जनसंख्या शिक्षा को जन–जन तक पहुँचाकर उनके जीवन स्तर में विशिष्ट एवं उपयुक्त परिवर्तन किया जा सकता है।

टाण्डा में लोगों के जीवन स्तर पर शिक्षा की अनियमितताओं के दुष्प्रभाव को दूर करने के लिए जिन प्रमुख सुझावों को प्रस्तुत किया गया है, उनमें शैक्षिक सुझाव की भी अपनी विशिष्ट महत्ता रही है। आज की बढ़ती हुई महँगाई को नियंत्रित करने के लिए सर्व प्रमुख आवश्यकता है कि जन सामान्य को व्यवसायिक शिक्षा पूर्णरूपेण दी जाय।

टाण्डा की शैक्षिक पृष्ठभूमि यद्यपि विकास के पथ पर निरन्तर प्रगतिमान है, परन्तु आज तक यहाँ के नागरिकों की मानसिक रूपरेखा उन उत्तम प्रकृति की व्यवस्थाओं से आच्छादित न हो सकी, जिन से लोक जीवन का सर्वांगीण पक्ष सुखकारी हो। सरकारी नौकरियों की एक सीमा होती है, परन्तु उदारीकरण, निजीकरण, भूमण्डलीकरण व औद्योगीकरण के इस मुक्त मण्डी में भी जो रोजगार मिल रहे हैं, वे अथाह रेत की राशि में एक दो बूँद जल के मानिन्द साबित हो रही है। नई नौकरियाँ क्या मिलेंगी, ऊपर से आर्थिक अधिभार की तलवार तनी हुई प्रतीत होती है। व्यक्ति किसी भी प्रकार से न तो सुख की प्राप्ति कर पा रहा है और न ही शान्ति और समृद्धि को अंगीकृत करके स्वयं अपने और समाज के विकास में संलग्न ही हो पा रहा है। समाज की इस रोजगारपरक समस्या को रोकने के लिए शिक्षा ही मात्र एक ऐसा सबल शस्त्र है, जिससे समाज को तात्कालिक लाभ की प्राप्ति हो सकती है। टाण्डा की शिक्षा व्यवस्था ने यहाँ के नागरिकों की आर्थिक उन्नति में विशेष योगदान किया है। लोग विशेष व्यवसायिक ज्ञान अर्जित कर अपने विकास के पथ पर अग्रसर हैं।

व्यवसायिक शिक्षा की बात को उपदेशात्मक लहजे में लिया जाता है, अमल में लाने का प्रयत्न नहीं किया जाता। मानव प्रतिभा किसी भी राष्ट्र का सबसे महत्वपूर्ण संसाधन है, क्योंकि अन्य संसाधनों की संसाधनता भी इसी पर निर्भर करती है। यदि अन्य संसाधनों की भाँति मानव प्रतिभा का राष्ट्र की प्रगति में हाथ बँटाना है तो उसका विकास होना ही चाहिए। टाण्डा में विभिन्न स्तरों पर शिक्षा प्राप्त करने हेतु असमान शैक्षिक संस्थानों का वितरण पाया जाता है।

इस प्रकार से टाण्डा में गरीबों में बढ़ती हुई बेरोजगारी को रोकने के लिए शिक्षा को महत्वपूर्ण माना गया है। यदि शिक्षा को केन्द्र में रखकर जन

सामान्य के जीवन स्तर में कुछ विशेष परिवर्तन लाने का प्रयास किया जाता है, तो यह उनके जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं को बतलाते हुए उनके सापेक्ष अर्जित की जाने वाली धनराशि व उस धनराशि का किया जाने वाला प्रयोग आदि सन्दर्भों में जो भी सुझाव प्रेषित किया जा रहा है, वह सब का सब व्यवसायिक शिक्षा की अनियमितताओं से उत्पन्न हुई समस्याओं के समाधान का प्रमुख रूप है।

टाण्डा के गरीबों की आर्थिक उन्नति के लिए सर्वप्रमुख तत्व उसकी शिक्षा का विकास है, क्योंकि जब तक वे शिक्षित नहीं होंगे तथा अपने जीवन के प्रमुख रूप को पहचान नहीं सकेंगे तथा अपने विकास के प्रमुख साधनों की खोज में स्वयं को लगा न सकेंगे, तब तक उनका आर्थिक विकास सम्भव नहीं है। भारत सरकार एवं उत्तर प्रदेश शासन ने संयुक्त रूप से शिक्षा के विकास के लिए एक अभियान चलाया है, जिसमें निःशुल्क शिक्षा और सर्व शिक्षा की व्यवस्था पर बल दिया गया है।

भारतीय संविधान की इसी शैक्षिक गुणवत्ता के प्रभाववश आज चारों ओर शिक्षा प्राप्त करने वालों की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है और आज लोग बड़े से बड़े ओहदों पर पहुँच भी रहे हैं। आज उनकी समृद्धि का सर्वप्रमुख कारण उनकी शैक्षिक श्रेष्ठता है। अनुकूल एवं उपयुक्त ज्ञान अर्जित कर लोग अपनी–अपनी प्रतिभा के अनुरूप अपने–अपने कार्य क्षेत्रों का चयन करते जा रहे हैं तथा आर्थिक उन्नति के महत्वपूर्ण स्रोतों के निर्धारण में अपनी भूमिका भी निभा रहे हैं। कुछ व्यवसायिक शिक्षा को प्राप्त कर न केवल अपने विकास का पथ ही प्रशस्त कर रहे हैं, बल्कि अपने पीछे के समाज के लिए एक महत्वपूर्ण प्रेरणा के स्रोत को भी छोड़ते जा रहे हैं, जिनसे ऊर्जावान होकर व्यक्ति अपनी उन्नति के प्रमुख तथ्यों का संकलन, सम्वर्धन, परिमार्जन व परिष्करण करता

जा रहा है। लोकविकास की यह जीवनोपयोगी लीला ही गरीबों के विकास का महत्वपूर्ण कारण बना हुआ है।

टाण्डा के गरीब लोगों के लिए व्यवसायिक शिक्षा की नितान्त आवश्यकता रही है। व्यवसायिक शिक्षा के अभाव में उनकी निरन्तर बढ़ रही विपन्नता को समाप्त नहीं किया जा सकता है और जब तक आर्थिक स्तर पर लोगों के अन्तर्मन में इस धारणा का जागरण नहीं होगा कि व्यवसायिक शिक्षा ही जन जागरण का मूल है। इससे ही जीवन स्तर में सुधार लाया जा सकता है, तब तक लोगों की स्थिति को सुधारा नहीं जा सकता है। साम्प्रतिक परिवेश में शासन द्वारा सर्व शिक्षा अभियान चलाकर जन–जन को शिक्षित करने का उपक्रम तो जारी है, किन्तु इस शिक्षित करने की व्यवस्था में व्यवसायिक शिक्षा की अनिवार्यता सम्मिलित नहीं है। आज आवश्यकता इस बात की है कि गरीबी रेखा के नीचे के लोग विधिवत् इस बात को समझ सकें।

व्यवसायिक शिक्षा के लिए अद्यावधि यह चाहिए कि औपचारिक, अनौपचारिक एवं निरौपचारिक शिक्षाओं में इसका समायोजन किया जाए। व्यवसायिक शिक्षा को औपचारिक शिक्षा का माध्यम बनाकर टाण्डा की गरीब जनता के जीवन से जुड़े संकटों को दूर कर पाना सम्भव नहीं है, इसके लिए इसका बहुआयामी स्वरूप अपनाया और जन–जन को यह बतलाया जाय कि प्रत्येक व्यक्ति को व्यवसायिक शिक्षा देकर उसकी समस्याओं का समाधान ढूँढा जा सकता है तथा उसके जीवन स्तर में पर्याप्त सुधार भी लाया जा सकता है।

आज आजादी के इतने वर्षों के बाद भी टाण्डा की दलित, शोषित, निर्बल, सर्वहारा, गरीबी रेखा के नीचे जीवन बिता रही जनता की आर्थिक स्थिति बड़ी ही दीन–हीन बनी हुई है। उसमें किसी भी प्रकार का कोई भी परिवर्तन उस ढंग से नहीं हो पा रहा है, जैसी कि सम्भावनाएँ की जाती हैं

अथवा 21वीं सदी में होना चाहिए। यदि इन समस्याओं का समुचित निदान ढूँढना चाहें, तो उसका मात्र एक ही विकल्प है कि व्यवसायिक शिक्षा की सार्वभौमिकता को लोकोपकारी बनाया जाय तथा जन–जन को यह बतलाया जाए की उनके जीवन का सम्पूर्ण पक्ष व्यवसायिक शिक्षा की प्राप्ति के पश्चात ही बेहतर व विशिष्ट हो सकता है। जब तक प्रत्येक व्यक्ति को इस बात की पूर्ण जानकारी न हो तब तक टाण्डा के गरीबों की जीवन अवस्थाओं को परिवर्तित कर उनमें उत्पन्न सम्भावनाओं की व्यवस्थाओं का विश्लेषण नहीं किया जा सकेगा।

2.6 श्रम उद्योग

टाण्डा के गरीब लोगों की मानसिक स्थिति भी उनके आर्थिक विकास की अवस्था में परिवर्तित हो रही है। वे शिक्षा और स्वास्थ्य के प्रति सजग होते हुए रोजगार के अवसर की वृद्धि को ही विशेष ध्यान में रखे हुए हैं। आज उनकी एक विशेष चाहत यह बनी हुई है कि अधिवासों का निर्माण वहीं हो जहाँ से उन्हें स्वास्थ्य शिक्षा, रोजगार एवं यातायात आदि के सभी संसाधन सहजतापूर्वक प्राप्त हो सकें। ऐसे में उनकी यह वैचारिक वृत्ति उनके आवासीय निर्माण को नवीन रूप दे रही है। परिणामतः वे किसी एक जगह पर किसी एक कुंबे में बँध कर रहने के बजाय अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप दूर–दूर फैल कर जीवन बिताने का कार्य कर रहे हैं और इस प्रकार से अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप अलग अलग जगहों पर प्रवास करने की उनकी यही धारणा ही टाण्डा के इस वर्ग के उत्थान में प्रमुख सहायक की भूमिका का निर्वाह कर रही है।

इस समय अछूत नवयुवक काफी उच्च शिक्षा प्राप्त हैं, किन्तु वे बेकार फिर रहे हैं और उनके लिए सुरक्षित स्थान उन्हें अयोग्य ठहरा कर असुरक्षित

कर दिए जाते हैं। सरकारी नौकरियों में चौथी श्रेणी में स्वीपर, भंगी, चपरासी और तीसरी श्रेणी के क्लर्कों को छोड़ कर प्रथम और द्वितीय श्रेणी में इनका अनुपात नगण्य है। यह सत्य है कि अभी तक टेक्निकल शिक्षा में अछूत बहुत पिछड़े हुए हैं, किन्तु उनका पिछड़ापन भी हिन्दू उच्च पदाधिकारियों और शिक्षा पदाधिकारियों की हृदय संकीर्णता का परिणाम है। इन्हें टेक्निकल कालेजों में दाखिला नहीं मिलता, क्योंकि इनके नम्बर कम होते हैं। डॉक्टरी एवं इन्जीनियरिंग कालेजों में और कई मामलों में आई.ए.एस. और आई.पी.एस. में भी अछूत होने के झूठे प्रमाणपत्र देकर सवर्ण हिन्दू छात्र और उम्मीदवार इनके आरक्षित स्थानों पर डाका डाल रहे हैं।

टाण्डा विकासखण्ड में पुवाल ले जाते हुए बालक का एक दृश्य

चित्र नं0 2.6

इन तथ्यों को अधिकारियों के नोटिस में लाने पर भी उनके खिलाफ कोई प्रभावी कार्यवाही नहीं होती। अछूतों के पास न तो बिजनेस व्यापार है और

न ही इनके पास गाँवों में उनकी अपनी भूमि है। यह बेचारे भूमिहीन खेत मजदूर हैं और जमींदार इन्हें मनमानी उजरत (मजदूरी) पर इस्तेमाल करते हैं। मजदूरी की उचित माँग करने पर उनका गाँव में बहिष्कार कर दिया जाता है। इन्हें शौचादि जाने के लिए भी गाँव में स्थान नहीं मिलता। परिणामतः इन्हें गाँव के भूमिदारों और जमींदारों के अन्याय के सामने झुकना पड़ता है। शहरों में तो किसी न किसी प्रकार झुग्गी झोंपड़ियों में सिर छिपा कर पेट पालने के लिए मजदूरी का थोड़ा बहुत धन्धा मिल जाता है, परन्तु गाँवों में जहाँ भारत की पचासी प्रतिशत जनसंख्या है, इन भूमिहीन मजदूर अछूतों की दशा दयनीय है। गाँवों में कपड़े बुनने तथा चमड़ा रंगने और जूते बनाने का जो उनका पैतृक धन्धा था, वह भी शहरी सवर्ण हिन्दुओं के हाथ में आ चुका है। अब इनसे यह रोजगार भी छिन गया है। आज विकास की उस प्रक्रिया को मानवता के आदर्श लक्ष्य के रूप में स्वीकार किया गया है जो वर्तमान पीढ़ी की जरूरतों को पूरा कर सके और भावी पीढ़ियों की क्षमता को भी कम न करे। विकास एक ऐसी व्यक्तिनिष्ठ और उपयोगी अवधारणा है, जिसके अर्थ को लेकर आम राय नहीं है। विभिन्न संदर्भों में इस शब्द को विभिन्न तरीके से इस्तेमाल किया जाता है। आम्तौर पर विकास की कल्पना ऐसे वांछित समाजपरक उद्देश्यों या विकास सूचकांकों के रूप में की जाती है जो कालांतर में कम नहीं होते।''[3]

रोजगार ही व्यक्ति को अपने पैरों पर खड़ा होने का सम्बल प्रदान करता है। रोजगार के द्वारा एक निर्बल, सर्वहारा, दलित–शोषित वर्ग का नागरिक आर्थिक उन्नति के प्रमुख आयामों को अर्जित करता है तथा अपने जीवन के मूलभूत आवश्यक उपादानों के संग्रह में अपनी प्रमुख भूमिका निभाता है। टाण्डा के गरीबों में रोजगार के प्रति आज जागरूकता सर्वत्र देखी जा सकती है

3. कटार सिंह, प्रौद्योगिकी, पर्यावरण एवं विकास, बलदेव सिंह मदान- सम्पादक-कुरुक्षेत्र, वर्ष 46, अंक 12, अक्टूबर 2001, पृ. 9-10

व्यापक स्तर पर लोग सचेष्ट हैं तथा यह भली–भाँति जानते हैं कि उन्हें किस प्रकार से आसानी से रोजगार प्राप्त हो सकते हैं। शासकीय एवं अशासकीय क्षेत्रों में कार्य के जितने अवसर विद्यमान हैं, उससे कहीं अधिक कार्य करने का मौका स्वरोजगार की परिधि में दीख पड़ता है। देश की बड़ी आबादी आज स्वरोजगार की इस परिधि में कार्य करते हुए अपने लिए आय के प्रमुख स्रोत सृजित कर रही है और यही विकास की प्रवृत्ति गरीब लोगों में भी देखने को मिलती है। आज टाण्डा के इन लोगों ने अपने व्यक्तिगत अवसर के बूते विकास के महत्वपूर्ण लक्ष्यों की प्राप्ति की है।

औद्योगिक क्षेत्र टाण्डा में विभिन्न उद्योगों के निरन्तर संचालित होने के कारण यहाँ के श्रमिकों को सहजता से कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ है। वे आसानी से अपने कार्य के अवसर प्राप्त कर रहे हैं। उनके द्वारा अर्जित आर्थिक आय के स्रोतों ने उनके जीवन स्तर में विशेष विकास का कार्य प्रारम्भ कर दिया है। आज वे कृषि क्षेत्र में कार्य के अवसर प्राप्त करते हुए अन्य व्यवसायिक क्षेत्रों में भी अपनी उपस्थिति का विशेष स्वरूप लोक सम्मुख प्रस्तुत कर रहे हैं। इससे मात्र उनके जीवन स्तर में सुधार नहीं हो रहा है, बल्कि सामाजिक धरातल पर एक सार्वजनिक विकास की लहर–सी चल पड़ी है, जो जन सामान्य के विकास के साथ–साथ इस क्षेत्र के आर्थिक उन्नति में काफी सहायक सिद्ध हो रही है।

2.7 निजी क्षेत्रों के अन्य उद्योग

अम्बेडकरनगर जनपद के औद्योगिक क्षेत्र टाण्डा के निवासियों ने अपनी आर्थिक स्थिति में सुधार हेतु निजी क्षेत्रों में विभिन्न औद्योगिक अवसरों को ढूढ निकाला है। उन्होंने एक ओर सार्वजनिक क्षेत्र में कार्य कर रहे कम्पनियों में

अपने रोजगार के अवसर ढूंढने का कार्य किया है, तो दूसरी ओर उनसे उत्प्रेरित होकर निजी क्षेत्रों में कार्य करने हेतु अपने व्यक्तिगत औद्योगिक इकाईयों को स्थापित करने का प्रयत्न भी किया है। उनके इस निजी विकास की परम्परा ने विकास के ऐसे खरे मानकों को फलीभूत करने का कार्य किया है, जिनसे न केवल उनकी व्यक्तिगत सम्वृद्धि होती है बल्कि उससे राष्ट्रीय आय में वृद्धि और सार्वजनिक पृष्ठिभूमि में उन्नति के अनेक आयाम स्वयं दृष्टिगोचर होते है। सम्प्रति यह विकास के अवधारणा एक सशक्त इकाई के रूप में क्रियाशील है और आर्थिक उन्नति के विविध मानकों के सतत् उन्नयन एवं परिवर्धन में सहायक की भूमिका निभा रहे है।

टाण्डा के आर्थिक संसाथनों में पशुओं को भी आर्थिक साधन का स्रोत माना गया है, जिनसे आर्थिक आय की बराबर पूर्ति होती रही है। पहले जहाँ इनका पालन परम्परिक किस्म से किया जाता था, वहीं आज इनके पालन को व्यावसायिक रूप दिया जा चुका है। लोगों को क्षेत्र में व्यावसायिक कार्य करने में विशेष सफलता भी प्राप्त हुई है। उन्होंने ऐसी विशेष व्यवसाय को बढ़ावा देने के लिए शासन एवं प्रशासन की ओर से सभी विकास खण्डों व कृषि विश्वविद्यालयों के माध्यम से जो सहयोग करने का प्राविधान किया है, लोग उससे भी जानकारी अर्जित करके अपने आर्थिक उन्नति में सहायक कार्यक्रमों को निरन्तर बढ़ावा दे रहे हैं। उनके कार्यों में इस प्रकार की व्यवसायिक उपलब्धता न ही केवल उन्हें आर्थिक दृष्टि से समृद्ध कर रही है, बल्कि उनके लिए सामाजिक मान मर्यादा को बनाये रखने की अद्‌भुत पृष्ठभूमि भी तैयार कर रही है। इस दिशा में टाण्डा की सभी जाति वर्ग एवं धर्म के लोग इसमें अपनी विशेष रुचि दिखा रहे हैं, किन्तु गरीब लोगों की रुचि विशेष बनी हुई है, क्योंकि ये जिन पशुओं के माध्यम से कम से कम पूँजी व कम से कम साधन एवं

संसाधन के माध्यम से अधिक से अधिक लाभ अर्जित करने में सफल हैं। इस प्रकार से टाण्डा के गरीब लोग पशु–पालन को व्यावसायिक रूप देने की अवस्था का व्यवस्थित विशलेषण करने के लिए कुछ प्रमुख बिन्दुओं पर दृष्टि केन्द्रित करना नितान्त अपेक्षित एवं औचित्यपूर्ण है।

टाण्डा की गरीब जनता के आर्थिक सुधार में पशुपालन का महत्वपूर्ण योगदान है। ग्रामीण परिवार, विशेषकर सीमान्त किसान और खेतिहर मजदूर इसे आय के पूरक स्रोत के रूप में अपनाते हैं। टाण्डा में पाये जाने वाले पशुओं की प्रजातियों में व्यापक अनुवांशिक विविधता पायी जाती है। इन पशुओं में जलवायु की विषमताओं, अपर्याप्त पोषाहार और उचित देखभाल के अभाव के बावजूद अपने को परिस्थितियों के अनुकूल ढालने की अनेक विशेषताएँ भी उपलब्ध हैं। पशुपालन से ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को रोजगार प्राप्त होता है, जो ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों के आर्थिक विकास में सहायक होता है।

"खाद्य सुरक्षा को बढ़ावा देना, गरीबी उन्मूलन, तथा खेती के लिए जरूरी प्राकृतिक संसाधनों और संवर्द्धन भारत में कृषि अनुसंधान के उद्देश्य होने चाहिए। खाद्य सुरक्षा को बढ़ाने तथा इनके कुशल वितरण और उपयोग की जरूरत पड़ेगी। जैव तकनीकी, प्रणालियों के अनुसंधान, प्राकृतिक स्रोत अर्थशास्त्र, सूचना प्रणालियों, कृषि व्यापार प्रबन्धक, उपज प्रसंस्करण, पारिस्थितिकरण तथा सौर ऊर्जा, जल ऊर्जा तथा पवन ऊर्जा जैसे नवीकरण साधनों के विकास व दोहन के लिए तकनीकों की तरफ भविष्य में अधिकाधिक ध्यान देना होगा। क्योंकि खेती के अंतर्गत क्षेत्र को बढ़ाने की सम्भावना सीमित करने के लिए बेहद जरूरी है। कृषि व अन्य सम्बन्धित क्षेत्रों में अनुसंधान कार्य नई फसलों के विकास पर केन्द्रित होना चाहिए जो ऊंची उपज दे सकें तथा सूखे और कीटों व रोगों को सह सकें, साथ विविध जलवायु में आसानी से

पनप सकें। इसी प्रकार पशु अनुसंधान कार्यों में भारतीय परिस्थितियों के अनुकूल अधिक दूध व मांस देनी वाले पशुओं के संवर्द्धन को प्राथमिकता मिली चाहिए। कृषि क्षेत्र से जुड़े अर्थशास्त्रियों को कृषि वैज्ञानिकों के साथ मिलकर खेती की उपज, आय, रोजगार तथा पर्यावरण पर नई कृषि तकनीकों के असर का मूल्यांकन करना चाहिए जो लम्बे समय में कुशलता, समानता और स्थिरता के लक्ष्यों को हासिल करने में सहायक हों।"[4]

टाण्डा के गरीब लोग पशुओं को आर्थिक संसाधन के रूप में प्रयुक्त करने के लिए बड़ी ही सहजता की अनुभूति कर रहे हैं। उनके द्वारा व्यवसायिक रूप में पाले जाने वाले दुधारू पशुओं में गाय, भैंस और बकरी प्रमुख हैं। उत्तर प्रदेश शासन एवं केन्द्र सरकार द्वारा समितियों, संस्थाओं, विश्वविद्यालयों के माध्यम से लोगों को अधिक से अधिक लाभ पहुँचाने का कार्य किया जा रहा है। आर्थिक रूप से अनुदान भी दिया जा रहा है। इतना ही नहीं शासन की ओर से पशु जीवन बीमा की भी योजना है, जिसके द्वारा लोग हर प्रकार की आकस्मिक विपदाओं से खुद को अलग महसूस करते हुए अपने जीवन निर्वाह की इन मूलभूत स्रोतों के निर्माण में संलग्न हैं। उनके द्वारा ऐसा किया जाना देश व समाज के लिए विकास का प्रमुख आधार उपलब्ध कराता है। ऐसे में क्षेत्र की सम्पूर्ण गरीब जनता जिन पशुओं को दुग्ध उत्पादन के लिए प्रयोग कर रही है, उनका विवरणात्मक रूप निम्नवत है–

गाय पालन का मुख्य उद्देश्य दूध एवं उनके बछड़ों से कृषि कार्य करना है। टाण्डा की अधिकांश गायें देशी नस्ल की हैं, जो 1500 से 1800 लीटर दूध प्रति व्यांत देती हैं। टाण्डा में जर्सी, फ्रिजियन, साहीवाल एवं हरियाणा आदि जैसी उच्च नस्ल की भी गायें मिलती हैं, जो 7500 से 8000

4. विनोद वार्ष्णेय, ग्रामीण महिलाओं के लिए वरदान हो सकती है जैव टेक्नोलाजी, बलदेव सिंह मदान-सम्पादक-कुरुक्षेत्र, वर्ष 46, अंक 12, अक्टूबर 2001, पृ. 15

लीटर दूध प्रति व्यांत देती हैं, लेकिन इनके बछड़े कृषि के लिए कम उपयुक्त होते हैं। साहीवाल हरियाणा इनकी अपेक्षा कम दूध देती हैं, लेकिन इनके बछड़े कृषि कार्य के लिए अधिक उपयोगी होते हैं। टाण्डा में कुल गायों की संख्या लगभग 20,475 है, जो कुल पशुओं की संख्या का 29.79% है। ग्रामीण क्षेत्रों में 30.18% एवं नगरीय क्षेत्रों में 17.59% गायें पाली जाती हैं। गाय पालन से ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों को रोजगार के साथ–साथ उनके आर्थिक एवं स्वास्थ्य में सुधार हुआ है।

गाय पालन की तरह भैंस पालन का मुख्य उद्देश्य दूध प्राप्त करना होता है। भैंस से दूध के साथ–साथ गोबर की खाद भी प्राप्त होती है, जो कृषि उत्पादन में सहायक होती है। टाण्डा में अधिकांशतः देशी नस्ल की भैंस मिलती हैं, जो 1400 से 1700 लीटर दूध प्रति व्यांत देती हैं। टाण्डा में मुर्रा एवं भदावरी उच्च नस्ल की भैंस भी मिलती है जो 3800 से 4000 लीटर दूध प्रति व्यांत देती है। दुग्धोत्पादन की दृष्टि से टाण्डा पूर्णतया विकसित नहीं हैं। एक गणना के अनुसार टाण्डा में 24 हजार भैसों में से 13.8 हजार भैसें दूध देती हैं। इससे स्पष्ट है कि भैसों की उपलब्धता संख्या 54.1% ही दूध देने योग्य हैं।

टाण्डा के आर्थिक विकास की दृष्टि से ग्रामीण क्षेत्र के मजदूरों, कृषकों एवं उत्पादकों द्वारा उत्पादित दूध की समुचित विपणन व्यवस्था की जा रही है। इस हेतु ग्रामीण क्षेत्र में प्रारम्भिक दुग्ध सहकारी समितियों का गठन करके दूध को प्राप्त करने, उत्पादकों को कार्यरत बनाकर उनकी आय में वृद्धि करने तथा दुग्धोत्पादन में वृद्धि लाने की परियोजना चलायी जा रही है। उपार्जित दूध के संग्रह के पश्चात प्रोसेसिंग करके उसकी विपणन व्यवस्था की जा रही है। वर्तमान समय में टाण्डा के दुग्ध उत्पादन का उपयोग साकेत डेरी, फैजाबाद द्वारा किया जा रहा है।

टाण्डा में भेड़–बकरियों को दूध मांस व ऊन के लिए पाला जाता है। भेड़ से मांस एवं ऊन प्राप्त होता है, जबकि बकरियों से दूध एवं मांस प्राप्त होता है। सभी प्रकार की जलवायु एवं परिस्थितियों में अपने को अनुकूल कर लेने वाली बकरी एक बहुपयोगी पशु है। इसके पालन–पोषण पर बहुत कम खर्च आता है। अतएव इन्हें 'गरीबों की गाय' कहा जाता है। टाण्डा में कुल भेड़–बकरियों की संख्या 13,887 है जिसमें 13,140 ग्रामीण एवं 737 नगरीय क्षेत्रों में मिलती हैं, जो टाण्डा के कुल पशुओं की संख्या का 17.63% है।

टाण्डा में भेड़–बकरियों का पालन ग्रामीण क्षेत्र के लोगों के आर्थिक विकास में सहायक सिद्ध हुआ है। इनके पालन का कार्य ग्रामीण अंचलों में ज्यादातर गरीबों द्वारा ही किया जाता है, जबकि शहरों में इन लोगों के साथ–साथ टाण्डा जैसे मुस्लिम बाहुल्य शहर में मुस्लिमों द्वारा भी इनका पालन दूध एवं मांस के रूप में किया जाता है। अम्बेडकरनगर के गरीब की आर्थिक प्रगति में यह बहुत ही सहायक सिद्ध हो रही है, क्योंकि कम लागत में ज्यादा लाभ देने वाली इससे अच्छी कोई पशु पालन की व्यवस्था हो ही नहीं सकती है। टाण्डा में इसका पालन कर लोग अर्थोपार्जन कर अपनी आर्थिक विपन्नता को दूर करने में लगे हुए हैं।

यह एक गन्दा पशु होता है, जो अधिकतर मल, अनाज के बचे–खुचे अंशों और अन्य गन्दगी पर निर्भर रहता है। सुअर आर्थिक दृष्टि से महत्वपूर्ण होते हुए भी इसे घृणा एवं नफरत की दृष्टि से देखा जाता है। इसका पालन टाण्डा के अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जाति के कुछ खास लोग ही करते हैं। यद्यपि यह अर्थोपार्जन का सबसे सुगम और सस्ता साधन है। टाण्डा के गरीब लोगों के विकास में इसका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। सुअर का पालन केवल मांस के लिए किया जाता है। मादा सुअर एक बार गर्भ धारण करने पर

6 से 7 बच्चे को जन्म देती है। टाण्डा में अधिकतर सुअर देशी नस्ल की हैं। टाण्डा में श्वेत यार्कशायर, मध्यम यार्कशायर और वर्कशायर आदि उच्च नस्ल की सुअर पाली जाती हैं। टाण्डा में कुल सुअर की संख्या 1,541 है, जिसमें 1,409 ग्रामीण एवं 132 नगरीय क्षेत्रों मे मिलती हैं। यह टाण्डा के कुल पशुओं की संख्या का 1.96% है।

मुर्गी पालन ग्रामीण क्षेत्र के लोगों की अतिरिक्त आय और उनके रोजगार का प्रमुख स्रोत बनकर उभरा है। इनका पालन पहले निम्न वर्ग के लोगों द्वारा किया जाता था, परन्तु वर्तमान समय में यह एक व्यवसाय का रूप धारण करता जा रहा है इसलिए इसे सभी वर्ग के लोगों ने पालना शुरू कर दिया है। मुर्गी पालन मुख्यतः मांस एवं अण्डा उत्पादन के लिए किया जाता है। मांस के लिए जानवर पालने की तुलना में मुर्गी पालन में व्यय कम होता है। मुर्गी का एक किग्रा मांस उत्पादित करने के लिए 2.5 किग्रा० अनाज की आवश्यकता होती है, जबकि एक किग्रा० सुअर का मांस उत्पादित करने के लिए 4 किग्रा० अनाज की आवश्यकता होती है। टाण्डा मे कुल मुर्गियों की संख्या 16,587 है, जिसमें 15,589 ग्रामीण एवं 998 नगरीय क्षेत्रों मे पायी जाती हैं। यह टाण्डा के कुल पशुओं की संख्या का 21.05% है।

भुवनेश्वर, हैसर घट्टा, मुम्बई और चड़ीगढ़ स्थित केन्द्रीय मुर्गी प्रजनन फार्म वैज्ञानिक विधि से मुर्गियों की नस्ल तैयार करने में लगे हुए हैं। इसमें अधिक अण्डे देने वाली संकर नस्ल की मुर्गियाँ तथा मांस के लिए तेजी से विकसित होने वाले संकर नस्ल के चूजे भी तैयार किये गये हैं। ग्रामीण परिवारों की आय में मुर्गीपालन से वृद्धि कराने के उद्देश्य से घर के पिछवाड़े मुर्गीपालन की एक योजना तैयार की गई है जिसके तहत चूजों को घर में

पाली जा सकने वाली संकर प्रजातियाँ ग्रामीण परिवारों को उपलब्ध कराई जा रही हैं।

इस प्रकार से औद्योगिक नगर टाण्डा में निजी क्षेत्रों व्यावसायिक कार्य करने के लिए लोगों ने अलग–अलग तरीके ढूँढ निकाले हैं। उनकी यह नियमित कार्य शैली उन्हें पर्याप्त कार्य के अवसर प्रदान किये हुए है। इससे उन्हें एक ओर आर्थिक उन्नति के पर्याप्त अवसर मिले हुए हैं, तो दूसरी ओर राष्ट्रीय आय की वृद्धि में वे अपनी अत्यन्त प्रभावी भूमिका का निर्वाह कर रहे हैं। निजी क्षेत्रों में लोगों द्वारा किया जाने वाला व्यवसायिक कार्य उन्हें आत्म सम्बल प्रदान करते हुए विशेष दशा अवस्था में परिस्थितियों का सामना करने का उपयुक्त अवसर भी उपलब्ध करा रहा है।

2.8 सार्वजनिक क्षेत्रों के अन्य उद्योग

अम्बेडकरनगर जनपद के औद्योगिक क्षेत्र टाण्डा में निजी क्षेत्रों में जहाँ कार्य के अवसरों में वृद्धि हुई, वहीं सार्वजनिक क्षेत्र में भी कार्य के अवसर का विकास हुई है। लोगों ने सार्वजनिक क्षेत्र में विविध उद्योगों को स्थापित कर आर्थिक उन्नति के ऐसे प्रभावशाली माध्यमों को ढूढ निकाला है, जिनसे उनके लिए रोजगार के पर्याप्त अवसर उभरकर सामने आये हैं, जिनसे वे अपने जीवन स्थिति में सुधार करते हुए लोगों को भी इस दिशा में बने रहने की प्रबल प्रेरणा भी दे रहे है, यह सार्वजनिक क्षेत्र का औद्योगिक उत्थान परक कार्य विविध भाँति टाण्डा की विकास नीति में प्रभावी भूमिका निभा रहा है।

टाण्डा, अम्बेडकरनगर एक कृषि प्रधान औद्योगिक क्षेत्र है। यहाँ की खेती सघन कृषि के रूप में प्रसिद्ध है। यहाँ की अधिकांश आबादी के भरण–पोषण के लिए यहाँ की भूमि का समुचित सदुपयोग किया जा रहा है। लोगों की आबादी अधिक बढ़ने से और उनमें संयुक्त परिवार की भावना के कमजोर पड़ने

के कारण परिवार में अलगाववादी नीतियाँ प्रबल हो रही है, जिसके चलते खेतिहर भूमि को टुकड़ों–टुकड़ों में विभाजित किया जा रहा है। इन छोटे–छोटे टुकड़ों में सहजता से कृषि करना सम्भव नहीं है। यदि ट्रैक्टर व अन्य बड़े साधनों का उपयोग किया जाय तो वह भी उस छोटे क्षेत्र में आसान नहीं है। ऐसे में वे अपनी कृषि पशुओं के सहारे करते हैं, जिनमें कृषि क्षेत्र के लिए गाय के बछड़ों का प्रयोग किया जाता हैं। इन्हीं के द्वारा जुताई रहट में इनको जोत कर सिंचाई व गन्ने की पेराई में कोल्हू में जोत कर इनका उपयोग किया जाता है। टाण्डा की गरीब जनता आज भी इन्हीं पशुओं के माध्यम से अपनी कृषि सम्पादित कर रही है वह ट्रैक्टर–ट्रक व अन्य बड़े आधुनिक संसाधनों का उपयोग करने में आर्थिक रूप से अक्षम है। अपनी इसी विशेष अक्षमता के कारण वह ऐसे साधनों का उपयोग करने के लिए विवश भी है। आज उसकी यही विवशता परम्परिक रूप में कृषि करने को उत्प्रेरित कर रही है।

आज भौतिक संसाधनों में वृद्धि के कारण लोग मशीनरी की ओर बढ़ रहे हैं। औद्योगिक क्षेत्र टाण्डा में सार्वजनिक स्तर पर निजी व्यवसायों को बढ़ावा देने के लिए लोग आज विविध कार्यों में संलग्न हैं। कहीं ईंट भट्ठे का उद्योग तो कहीं धागा उद्योग तो कहीं मिट्टी के बर्तन आदि के निर्माण को औद्योगिक रूप में अपनाने का कार्य किया जा रहा है। इतना ही नहीं यहाँ के लोग शासकीय सहायता प्राप्त कर कुछ ऐसे उद्यमों से भी जुड़े हुए हैं, जो उन्हें विशेष आर्थिक उन्नति में सहायता प्रदान करे तथा आवश्यकतानुसार उनके जीवनोत्थान में अपनी विशिष्ट भूमिका का निर्वाह कर सके।

सार्वजनिक क्षेत्र में निजी व्यावसायों में बढ़ावा देते हुए यहाँ के नागरिकों ने कृषि यंत्र उद्योग को प्रमुख अर्थोत्पादन स्रोत बना रखा है। लोगों ने थोड़े प्रयत्न के माध्यम से विभिन्न लोगों के सहयोग से समितियों का गठन कर

औद्योगिक संस्थाओं का संचालन प्रारम्भ कर दिया है, इससे उन्हें आर्थिक आय की प्राप्ति हो रही है तथा एक साथ अनेक लोगों को कार्य का उचित एवं उपयुक्त अवसर मिला हुआ है। लोगों की यह कार्यशैली और अर्थोत्पादन की सार्वभौमिकता उनके आर्थिक विकास के अवसरों के सृजन में मूलभूत भूमिका का निर्वाह कर रहा है।

इस दिशा में टाण्डा की सभी जाति वर्ग एवं धर्म के लोग इसमें अपनी विशेष रुचि दिखा रहे हैं, किन्तु गरीब लोगों की रुचि विशेष बनी हुई है, क्योंकि ये जिन पशुओं के माध्यम से कम से कम पूँजी व कम से कम साधन एवं संसाधन के माध्यम से अधिक से अधिक लाभ अर्जित करने में सफल हैं। इस प्रकार से टाण्डा के गरीब लोग पशु–पालन को व्यावसायिक रूप देने की अवस्था का व्यवस्थित विशलेषण करने के लिए कुछ प्रमुख बिन्दुओं पर दृष्टि केन्द्रित करना नितान्त अपेक्षित एवं औचित्यपूर्ण है।

"मौजूदा शती ज्ञान की है। नए ज्ञान की प्रतीक जैव टेक्नोलाजी भी है। आम चर्च है। कि सूचना टेक्नोलाजी के बाद नया ज्वार जैव टेक्नोलाजी का आने वाला है। भारत इस नए ज्ञान के प्रवाह से क्यों वंचित रहेगा? लेकिन भारत की 60 प्रतिशत आबादी गाँवों में बसती है। क्या यह आबादी जैव टेक्नोलाजी के जादू से अछूती रहेगी? कतई नहीं। जैव टेक्नोलाजी को ग्रामीण प्रांतरों में पहुंचाने के लिए शुरु की गई विभिन्न पायलट परियोजना में उजागर किया है कि कृषि क्षेत्र में जैव टेक्नोलाजी के प्रसार की देश में प्रमुख एजेंट ग्रामीण महिलाएं हो सकती हैं।

टाण्डा की गरीब जनता के आर्थिक सुधार में पशुपालन का महत्वपूर्ण योगदान है। ग्रामीण परिवार, विशेषकर सीमान्त किसान और खेतिहर मजदूर इसे आय के पूरक स्रोत के रूप में अपनाते हैं। टाण्डा में पाये जाने वाले पशुओं

की प्रजातियों में व्यापक अनुवांशिक विविधता पायी जाती है। इन पशुओं में जलवायु की विषमताओं, अपर्याप्त पोषाहार और उचित देखभाल के अभाव के बावजूद अपने को परिस्थितियों के अनुकूल ढालने की अनेक विशेषताएँ भी उपलब्ध हैं। पशुपालन से ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को रोजगार प्राप्त होता है, जो ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों के आर्थिक विकास में सहायक होता है।

इस प्रकार से टाण्डा के आर्थिक विकास में यहाँ की विभिन्न औद्योगिक ईकाइयाँ अलग–अलग रूपों में अपना कार्य सम्पादित कर रही हैं। लोग इससे विशेष लाभ की प्राप्ति कर रहे हैं। इससे मात्र क्षेत्र की आर्थिक आय में ही वृद्धि नहीं हो रही है, बल्कि क्षेत्रीय जनता भी अपने लिए आय के मूलभूत स्रोतों को प्राप्त कर विकास के प्रमुख सोपानों पर अग्रसर है। यदि इसी भाँति उसे औद्योगिक विकास के प्रमुख इकाईयों का सहयोग प्राप्त होता रहा तो व्यवसायिक शिक्षा के प्रति उसकी जागरूकता इसी भाँति बनी रही, वह अपने ज्ञान–मान व कार्य करने की निरन्तरता, कर्मठता, सक्रियता का ईमानदारी से निर्वाह करता रहा तो निकट भविष्य में यह क्षेत्र मात्र अम्बेडकरनगर जनपद का ही नहीं अपितु सम्पूर्ण भारतवर्ष में अपनी विशिष्ट छवि के लिए जाना, माना व पहचाना जायेगा। इसकी उत्प्रेरणा ही आज के आर्थिक रीति–नीति में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करेगी ऐसी उम्मीद की जाती है।

✦✦✦